"और तुम
सच्चाई से वाकिफ होगे।
और सच्चाई
तुमको आजाद करेगी।"

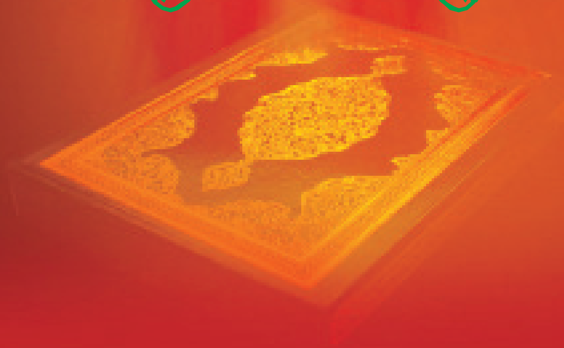

इज़हार-ए-हक़

اظہارِ حق

इज़हार- ए -हक़

शुरू करते हैं अपने रब्ब के नाम से जो बड़ा ही क़ुदरत वाला है।

अज़ीज़ क़ारयीन,

एक मशहूर कहावत है,''जब कोई भी झूठ बोला जाता है और उसे बार-बार दोहराया जाता है तो लोग उस झूठ को सच मानने लगते हैं''। हम चंद बातों को कुछ रस्मो-रिवाज की ख़ातिर सच मानने लगते है; या तो जब कोई नामवर या मौतबर इन्सान दावा करता है कि यह बात सच हैं; तो उसे सच माना जाता है बस इतना ही नहीं बल्कि जब कोई ग़ैर मौतबर आलिम इन्हें सच जताकर पेश करता है. तौभी इसे सच मान लिया जाता है और आम इन्सान ये समझ बैठते हैं कि इन तमाम लोगो ने अच्छी तरह से इन मौज़ुओं की तसदीक़ की है और उन्हें पूरी तरह से समझा है जिन-जिन बातों पर ये लोग अपना दावा पुख़्तिगी से पेश करते हैं!

मगर आज वो ज़माना आ गया है कि हमे ज़िम्मेदाराना तौर पर इन बातों की तहक़ीक़ात खुद ही करनी चाहिए; क़ब्ल इसके कि सच्चाई से वाक़िफ होने के लिए हम दूसरों के मोहताज बने रहें।जब कोई बीमार अपना इलाज किसी डॉक्टर से करवाना चाहता है, तो वो फ़ैसला करता है कि अपना इलाज ऐसे डॉक्टर से करवाए जो उस मर्ज़ का इलाज करने में माहिर हो। जब हम बाज़ार से फल, सब्ज़ियाँ वग़ैरह जैसे खाने का सामान ख़रिदते हैं, तब बड़ी नाप तौल के साथ उन चीज़ों का सौदा करते हैं, और उन फ़लों और सब्ज़ियों को अलग कर देते हैं, जो सड़ी गली या दाग़ धब्बों वाली होती हैं, ताकि ताज़ी और मुफ़ीद ग़िज़ा से हमारे जिस्म को फ़ायदा हो। तब तो इस पर ग़ौर करने की बात है कि रुहानी बातों के बारे में सोचना

कितना लाज़मी हो जाता है जिसका सीधा असर हमारी आनेवाली आख़िरत कि ज़िन्दगी पर पड़ने वाला है।

एक आलिम ने फ़रमाया है, ''किसी बात पर शक ज़ाहिर करना गुनाह नहीं है, मगर हर एक बात को मान लेना अक्सर जानलेवा साबित हो सकता है।'' किसी की बताई बात या पेश किये गये राय-मशवरे को कुबूल कर लेने से पहले हमें ठीक तौर से तहक़ीक़ात कर लेनी चाहिए कि क्या ये बातें सच भी हैं या नहीं। पेश किये हर दावे पर हमें सवाल उठाना चाहिए। अक्सर लोग उन्हीं बातों को कुबूल करना पसंद करते हैं जो उन्हें निजि तौर पर पसंद आ जाती हैं। एक और नामवर फ़िलॉसफर यूँ फ़रमाते हैं, ''खुद को धोखे में रखने से आसान दूसरा कोई और काम नहीं है। क्योंकि जिस चीज़ को कोई शख़्स पसंद करने लगता है उसी को वो सच भी मानने लगता है।'' अगर हम इमानदारी से सोचना चाहते हैं तब तो हमें अपने अक़ीदो को कसौटी पर परखना चाहिए, ये देखने के लिए कि वह खरा है या खोटा। अगर वो खरा नहीं उतरता, तब तो हमें ये मान लेना चाहिए कि इसकी बुनियाद सच्चे सुबूतों पर नहीं रखी गई थी, और जिस बात को सच माना जा रहा था उसका वास्ता सच्चाई से दूर-दूर तक का नहीं है।

इसी ख़्याल को ज़ेहन में रखते हुए अब हम आगे कुछ ख़ास मुद्दों पर ग़ौर करेंगे। वैसे तो मसीही मज़हब में ऐसे पाँच बुनियादी मुद्दे हैं जिनके बारे में हमारे मुसलमान दोस्तों को कुछ ग़लतफ़हमियॉ हैं और हम इन ग़लतफ़हमियों को दूर करना चाहते हैं।

ये पाँच अहम मुद्दे हैं:

1) बाइबल मुक़द्दस की सच्चाई (यानि तौरेत शरीफ़, ज़बूर शरीफ़, इन्जील शरीफ़, और नबियों के सहीफ़े)

2) ख़ुदा का तसव्वुर।

3) हज़रत ईसा मसीह की विलादत।

4) हज़रत ईसा मसीह का मसलूब होना।

5) गुनाहों की माफ़ी और नजात।

1 - बाइबल मुक़द्दस की सच्चाई

बाइबल मुक़द्दस क्या है?

यूनानी जुबान के लफ्ज़ **'बिब्लिओस'** से ही लफ्ज़े बाइबल अंग्रेज़ी जुबान में शामिल किया गया हैं, जिसके मॉनी हैं, ''किताबों का मजमुआँ'' (Library) तो बाइबल मुक़द्दस सिर्फ एक अकेली किताब नहीं है बल्कि कई किताबो का एक मजमुआँ है। इन तमाम किताबों को **40** से ज़्यादा लोगों ने अलग-अलग जुबानो (इब्रानी, एरामाइक और यूनानी) में **1500** साल के अर्से में तीन मुख़्तलिफ बर्रेआज़मों (एशिया, अफ्रिक़ा और योरोप) में रहकर लिखा है।

बाइबल मुक़द्दस में बखूबी और तफ़सीर से वो सारा बयान दर्ज है जब से आलम की इबतिदा हुई और फिर हज़रत आदम और बीबी हव्वा पैदा हुए और बाद में उनका जन्नत से बेदखल किया जाना। और फिर आगे चलकर नबियों का आना जैसे कि **हज़रत हाबिल, हज़रत हनोक, हज़रत नूह, हज़रत इब्राहिम, हज़रत इसहाक़, हज़रत याक़ूब, हज़रत यूसुफ़, बनी इसराईल के बारह क़बीलों, हज़रत मूसा, हज़रत यहोशू, हज़रत सैमूएल, हज़रत दाऊद, हज़रत सुलैमान** के एलावा भी कई और नबी और आख़िर में हज़रत ईसा मसीह और उनके शागिरदों का तमाम ज़िक्र है।

बहुत कम मुस्लिम हज़रात ये जानते होगें कि बाइबल मुक़द्दस में तमाम नबियों की लिखी इलहामी किताबे शामिल हैं। आम तौर पर मुसलमान हज़रात ये सोचते हैं कि ईसाई लोग सिर्फ़ इन्जील शरीफ़ ही पढ़ते हैं और यहूदी तौरेत पढ़ते हैं। मगर सच तो यह है कि ईसाई लोग बाइबल मुक़द्दस में मौजूद तमाम नबियों की किताबों का मुतॉला इस कामिल ईमान के साथ

करते हैं कि वह सभी ख़ुदा की तरफ से नाज़िल हुई हैं और इलहामी हैं। जब भी हमारे मुस्लिम भाई-बहन बाइबल मुक़द्दस को मानने से इन्कार करते है तब वो अनजाने में ख़ुदा के भेजे हुए तमाम नबियों का भी इन्कार कर बैठते है।

तौरेत शरीफ़, ज़बूर शरीफ़ और इन्जील शरीफ़:

आज हमारे मुस्लिम भाइयों का ये क़ौल है कि जो बाइबल मुक़द्दस हमें दस्तियाब है वह असली नहीं रही, बल्कि ये बदल दी गई है। और इसके बदले जो असली बाइबल मुक़द्दस है (तौरेत शरीफ़, ज़बूर शरीफ़ और इन्जील शरीफ़) पहले मौजूद थी मगर आज उसका वजूद नहीं रहा। और यही तालीम मुसलमानों को बचपन से दी जाती है कि तौरेत शरीफ़ में हिदायत और एहकाम जो हज़रत मूसा को ख़ुदा ने दिये थे और ज़बूर शरीफ (Psalms) जो हज़रत दाऊद पर नाज़िल की गई थी, और इन्जील शरीफ़ (Gospel) जिसे हज़रत ईसा मसीह अपने साथ लेकर तशरीफ़ लाए थे, उन सब को लागों ने बदल डाला है। तो इस पर हम मुसलमान भाईओं से एक सीधा सा सवाल करना चाहेगें, "आपको कैसे पता चला कि बाइबल मुक़द्दस को बदल दिया गया है? और इसकी मालूमात आप ने कहाँ से पाई है? क्या आपने ख़ुद इसकी तहक़ीक़ात की है और इस नतीजे पर पहुँचे हैं, या कहीं किसी दूसरों के कहने पर आपने इस बात पर यक़ीन किया है।"अगर बाइबल को मानने या न मानने के लिए यह उसूल वाजिब है तो फिर हर एक मुद्दे या बात को मानने या ना मानने के लिए इसी उसूल को इख़्तियार करने में कोई हर्ज नहीं है।

किसी भी बात को मान लेने से पहले ये बेहतर होगा कि हमें उसकी तहक़ीक़ात कर लेनी चाहिए कि यह बात सच है या नहीं। अगर ये साबित हो जाए कि बाइबल मुक़द्दस बदली जा चुकी है तो बेहतर होगा कि हम इसे रद्द कर दें। अगर कहीं यह साबित हो जाता है कि वह असली है तब तो हमें हर हाल में इसे कुबूल करके इस पर फ़ौरन ईमान ले आना चाहिए। तो चलिए आगे देखते हैं कि बाइबल मुक़द्दस तबदील की गई है या नहीं।

अ) कुरआन शरीफ़ बाइबल मुक़द्दस के बारे में क्या कहता है

मज़हबे इस्लाम हज़रत ईसा मसीह के 600 साल बाद इस दुनिया में हज़रत मोहम्मद के ज़रिये अरब की सर ज़मीन पर आया। कुरआन शरीफ़ खुद बाइबल मुक़द्दस की तसदीक़ पेश करता है। यानि हज़रत मूसा की तौरेत, हज़रत दाउद कि लिखी ज़बूर और हज़रत ईसा की इन्जील की गवाही देता है। तो इस्लाम के चलते ये तीनो मुबारक किताबें दुनिया में मौजूद थी। आईये हम देखें कि कुरआन शरीफ़ इन किताबों के बारे में क्या कहता है?

1) तौरेत शरीफ़ और इन्जील शरीफ़ ये दोनो किताबें हज़रत मोहम्मद की हयात में यहूदियों और ईसाईयों के पास थी।

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِندَهُمْ فِي **التَّوْرَاةِ وَالإِنْجِيلِ** يَأْمُرُهُم بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنكَرِ

"जो लोग पैरवी करेंगे उस रसूल की जो नबी उम्मी (अनपढ़) है, जिसे वे अपने यहां तौरात ओर इंजील में लिखा हुआ पाते हैं।" ***(सूरह आराफ़ 7: 157*** *मौलाना वहीदुददीन ख़ाँ)*

وَلَمَّا جَاءهُمْ كِتَابٌ مِّنْ عِندِ اللّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ وَكَانُواْ مِن قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُواْ فَلَمَّا جَاءهُم مَّا عَرَفُواْ كَفَرُواْ بِهِ فَلَعْنَةُ اللَّه عَلَى الْكَافِرِينَ

''और जब उनके पास अल्लाह की किताब ***(कुरआन)*** *आई जो उनके साथ वाली किताब* ***(तौरेत)*** *की तस्दीक़ फ़रमाती है। ''*

*(**सूरह बक़र 2: 89** कंज़ुल ईमान)*

ये आयात हमे बताती हैं कि यहूदियों और ईसाईयों के पास तौरेत शरीफ़ और इन्जील शरीफ़ मौजूद थी। ये आयतें यूँ नहीं फ़रमातीं कि ये किताबें गुज़रे दौर में यहूदियों और ईसाईयों के पास हुआ करती थीं और अब वो उठा ली गई हैं। हालाँकि कुरआन शरीफ़ फ़रमाता है कि तौरेत शरीफ़ और इन्जील शरीफ़ बज़ाते खुद कलामे इलाही हैं जो यहूदियों और ईसाईयों के पास हज़रत मोहम्मद के ज़माने में भी थीं।

2) कुरआन शरीफ़ हमें तालीम देता है कि हर उस कलामे पाक का यकसाँ ऐहतराम करना चाहिये जो नबियों पर नाज़िल हुआ था।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ آمِنُواْ بِاللّهِ وَرَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ عَلَى رَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِيَ أَنزَلَ مِن قَبْلُ وَمَن يَكْفُرْ بِاللّهِ وَمَلاَئِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلاَلاً بَعِيدًا

''ऐ ईमान वालो, ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी और उन किताबों पर जो उसने पहले नाज़िल कीं। और जो शख़्स इंकार करे अल्लाह का और उसके फ़रिश्तों का और उसकी किताबों का और उसके रसूलों का और

*आख़िरत के दिन का तो वह बहक कर दूर जा पड़ा।" **(सूरह निसा 4: 136** मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

قُلْ آمَنَّا بِاللّهِ وَمَا أُنزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَقَ وَيَعْقُوبَ وَالأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَى وَعِيسَى وَالنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ لاَ نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ

*"कहो हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस पर जो हमारे ऊपर उतारा गया है और जो उतारा गया इब्राहीम पर इस्माईल पर इस्हाक़ पर और याक़ूब पर और याक़ूब की औलाद पर। और जो दिया गया मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को उनके रब की तरफ़ से। हम इनके दर्मियान फ़र्क़ नहीं करते।" **(सूरह आले-इमरान 3: 84** मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

इन आयतों के मुताबिक़ हर एक मुसलमान पर ये वाजिब होता है कि वह खुदा की भेजी हुई किसी भी किताब का इन्कार न करे और उन पर यकसाँ ईमान ले आए, लेकिन ज़्यादा तर मुसलमान भाई बाइबल मुक़द्दस का साफ़-साफ़ इन्कार कर देते हैं और उसका ऐहतराम नहीं करते।

3) कुरआन शरीफ़ में फ़रमाया गया है कि उससे पहले जो मुक़द्दस किताबें लिखी गई हैं, वो उन से राज़ी है और वह उनकी तस्दीक़ करता है।

وَمَا كَانَ هَذَا الْقُرْآنُ أَن يُفْتَرَى مِن دُونِ اللّهِ وَلَكِن تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لاَ رَيْبَ فِيهِ مِن رَّبِّ الْعَالَمِينَ

*"और यह कुरआन अल्लाह के सिवा किसी और का गढ़ा हुआ नहीं है, (कि उनसे सादिर हुआ हो) बल्कि यह तो उन (किताबों) की तस्दीक़ (करने वाला) है जो इससे पहले (नाज़िल) हो चुकी हैं।" **(सूरह यूनुस 10: 37** मौलाना अशरफ़ अली थानवी)*

यानि कुरआन शरिफ़ ये कुबूल करता है कि वह हर एक इल्हामी किताब का मुहाफिज़ बन कर उतरा है।

وَأنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنزَلَ اللّهُ

*"और हमने तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी हक़ के साथ, तस्दीक़ (पुष्टि) करने वाली पिछली किताब की और उसके मज़ामीन पर निगहबान।" (**सूरह माइदा 5: 48** मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ

*"और हमने तुम्हारी तरफ़ जो किताब 'वही' (प्रकाशन) की है वह हक़ है, उसकी तस्दीक़ करने वाली है जो इसके पहले से मौजूद है।" (**सूरह** फ़ातिर **35: 31** मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

4) कुरआन शरिफ़ अहले किताब (बाइबल मुक़द्दस के पढ़नेवालों) को आगाह करता है कि वह खुदा की तरफ़ से उन तक भेजे हुए कलाम पर क़ायम रहें।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَسْتُمْ عَلَى شَيْءٍ حَتَّىَ تُقِيمُواْ التَّوْرَاةَ وَالإِنجِيلَ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم مَّا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا فَلاَ تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

*"कह दो, ऐ अहले किताब तुम किसी चीज़ पर नहीं जब तक तुम क़ायम न करो तौरात और इंजील को और उसे जो तुम्हारे ऊपर उतरा है तुम्हारे रब की तरफ़ से।" (**सूरह माइदा 5: 68** मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

अब क़ाबिले ग़ौर बात यह है कि अगर तौरेत शरीफ़ और इन्जील शरीफ़ को मनसूख़ या बदल दिया गया है, तो फिर कैसे यहूदी और ईसाई उनकी हिदायतों पर चल सकते थे? ऊपर दर्ज आयात साफ़ तौर से हमें बताती हैं कि कुरआन शरीफ़ पहले वाली किताबों को ना तो रद्द करने आया है और ना तो उनके बदले भेजा गया था, बल्कि वह तो इन से राज़ी है। तो कुरआन शरीफ़ में दर्ज है कि जो किताबें यहूदियों और ईसाईयों के पास हैं, वह क़ाबिले यक़िन हैं क्योंकि वो खुदा की भेजी हुई हैं। इसके मॉनी यह हुए कि वह जो दूसरी किताब (कुरआन शरिफ़) है, और उस से पहले नाज़िल हुई किताबों यानि (तौरेत शरीफ़, ज़बूर शरीफ़ और इन्जील शरीफ़) की खुसुसियात और उनके बेमिसाल अंदाज़ की तसदीक़ करता है। इसे यूँ भी कहा जा सकता है, "ज़रा सुनो तो लोगों, मैं आया हूँ ताकि मैं तौरेत शरीफ़, ज़बूर शरीफ़ और इन्जील शरीफ़ की गवाही दूँ। इन में जो जो बातें लिखी हैं वह सारी की सारी सही हैं, और मैं भी उन से राज़ी हूँ।"

5) हर एक मुसलमान को खुदा पाक ने यह हुक्म फ़रमाया है, कि जब भी वह किसी यहूदी से हलाल खाने की बात पर बहस करे, तब वह उस यहूदी से इसका सुबूत हज़रत मूसा की तौरेत शरीफ़ के हवाले से माँगे।

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلاًّ لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ إِلاَّ مَا حَرَّمَ إِسْرَائِيلُ عَلَى نَفْسِهِ مِن قَبْلِ أَن تُنَزَّلَ التَّوْرَاةُ قُلْ فَأْتُواْ بِالتَّوْرَاةِ فَاتْلُوهَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ

*"सब खाने की चीज़ें बनी ईस्राईल के लिए हलाल थीं सिवाए उसके जो इस्राईल ने अपने ऊपर हराम कर लिया था इससे पहले कि तौरात उतरे। कहो कि तौरात लाओ और उसे पढ़ो, अगर तुम सच्चे हो।" **(सूरह आले-इमरान 3: 93** मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

अगर तौरेत शरीफ़ को बदल दिया गया है या वो मनसूख़ की गई है तब कोई यहूदी उसे पढ़कर सच्चाई क्यों जानने की तकलीफ़ उठायेगा। अगर उन्हें पढ़ने का हुक्म कुरआन में है तो उससे पहले की लिखी ये किताबें बेशक क़ाबिले यक़ीन होगीं और ऐसा ही ख़्याल इसमें ज़ाहिर होता है।

وَقَالُواْ لَن يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلاَّ مَن كَانَ هُوداً أَوْ نَصَارَى تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ قُلْ هَاتُواْ بُرْهَانَكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ

*"और अहले-किताब बोले हरगिज़ जन्नत मे न जाएगा मगर वो जो यहूदी या नासरानी हो ये उनकी ख्याल बन्दियाँ हैं तुम फ़रमाओ लाओ अपनी दलील अगर सच्चे हो।" **(सूरह बक़र 2: 111** कंजुल ईमान)*

6) जो किताबें हज़रत मोहम्मद से भी पहले थीं, उन्हीं के ज़रिए हज़रत मोहम्मद और आपके सहाबियों को उस शक को दूर करना था, जो हज़रत मोहम्मद पर उतरी 'वही' (अल्लाह की वाणी) को लेकर उनमें पैदा होता था।

فَإِن كُنتَ فِي شَكٍّ مِّمَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ فَاسْأَلِ الَّذِينَ يَقْرَؤُونَ الْكِتَابَ مِن قَبْلِكَ لَقَدْ جَاءكَ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلاَ تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ

*"पस अगर तुम्हें उस चीज़ के बारे में शक है जो हमने तुम्हारी तरफ़ उतारी है तो उन लोगों से पूछ लो जो तुमसे पहले से किताब पढ़ रहे हैं। बेशक यह तुम पर हक़ आया है तुम्हारे रब की तरफ़ से, पस तुम शक करनेवालों में से न बनो।" **(सूरह यूनुस 10: 94** मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

अगर पहले ही तौरेत शरीफ़, ज़बूर शरीफ़ और इन्जील शरीफ़ (यानी बाइबल मुक़द्दस) बदल दी गई है तो फिर अल्लाह-तआला ने हज़रत मोहम्मद को हुक्म क्यों फ़रमया कि आप जाकर उन लोगों से सलाह लें जो इन किताबों के आलिम थे? क्या अल्लाह-तआला इस बात से नावाक़िफ़ था कि यह तमाम किताबें इन्सानों नें बदल दी हैं?

अब इस दलील से ये साबित होता है कि इन किताबों को शुरू से ही महफ़ूज़ रखा गया है क्योंकि अल्लाह-तआला की तरफ़ से ये हुक्म फ़रमाया गया था।

7) आख़िर में कुरआन शरिफ़ फ़रमाता है कि खुदा बाइबल मुक़द्दस का मुहाफिज़ है और वही अपनी किताबों की हिफ़ाज़त करता है।

وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَالذِّكْرَإِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا

*''यह याददिहानी **(ज़िकरा)** (किताब) हम ही ने उतारी है और हम ही इसके मुहाफ़िज़ (संरक्षक) हैं। '' **(सूरह हिज्र 15: 9** मौलाना वहीदुद्दीन)*

इस आयत के ज़रिये हमें ये मालूम पड़ता है कि अल्लाह-ताआला जो भी पैग़ाम नज़िल करता है वो खुद उसका मुहाफ़िज़ है। ये अल्लाह का वायदा है अपने हर एक पैग़ाम के लिए।इस आयत में अरबी जुबान में जो लफ्ज़ पैग़ाम के लिए इस्तेमाल किया गया है वो है ''ज़िकरा''। यही लफ़्ज़ ''ज़िकरा'' कुरआन शरीफ़ में उससे पहले की किताबों के लिए भी इस्तेमाल किया गया है। यक़ीनन इस में बाइबल मुक़द्दस शामिल है, जैसे और भी आयतों में साफ़ साफ बयान किया गया है।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلاَّ رِجَالاً نُّوحِي إِلَيْهِمْ فَاسْأَلُواْ أَهْلَ الذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لاَ تَعْلَمُونَ

*''और हमने तुमसे पहले भी आदमियों ही को रसूल बनाकर भेजा, जिनकी तरफ़ हम 'वही' (ज़िकरी) (प्रकाशन) करते थे, पस अहले इल्म से पूछ लो अगर तुम नहीं जानते।''**(सूरह** नहल **16: 43** मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلاَّ رِجَالاً نُّوحِي إِلَيْهِمْ فَاسْأَلُواْ أَهْلَ الذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لاَ تَعْلَمُونَ

*''और तुमसे पहले भी जिसे हमने रसूल बनाकर भेजा, आदमियों ही में से भेजा। हम उनकी तरफ़ 'वही' (ईश्वरीय वाणी) (ज़िकरी) भेजते थे।''**(सूरह अम्बिया 21: 7** मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى وَهَارُونَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاء وَذِكْرًا لِّلْمُتَّقِينَ

*"और हमने मूसा और हारून को फ़ुरक़ान (सत्य-असत्य कही कसौटी) और रोशनी और नसीहत (ज़िकरा) अता की ख़ुदा तरसों (ईश परायण लोगों) के लिए, जो बिना देखे अपने रब से डरते हैं और वे क़यामत का ख़ौफ़ रखने वाले हैं ।"(**सूरह अम्बिया 21: 48** मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَى وَأَوْرَثْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ
هُدًى وَذِكْرَى لِأُولِي الْأَلْبَابِ

*"और हमने मूसा को हिदायत अता की और बनी इस्राईल को किताब का वारिस बनाया, रहनुमाई और नसीहत (ज़िकरा) अक़्ल वालों के लिए।"(**सूरह** मुअ्मिन **40: 53** मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِن بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ
الصَّالِحُونَ

*"और ज़बूर में हम नसीहत (ज़िकरी)के बाद लिख चुके हैं कि ज़मीन के वारिस हमारे नेक बंदे होंगे। (**सूरह अम्बिया 21: 105** मौलाना वहीदुद्दीन)*

ये सारी आयतें इस बात को पुख़्ता कर देती हैं कि जो जो इनकिशाफ़ हज़रत मूसा और हज़रत दाऊद पर उतरे थे, और जो जो किताबें यहूदियों और ईसाइयों के पास हज़रत मुहम्मद की सलामती में थीं, वह ख़ुदा की जानिब से थीं और उसने इनकी हिफ़ाज़त करने का वादा फ़रमाया है। अगर कोई मुसलमान कहता है कि बाईबल बदल दी गई है, तो दूसरे लफ्ज़ो में वह ये मानता है कि ख़ुदा पाक अपने भेजे हुए पैग़ाम को बदले जाने से रोक ना सका, और अपने इलहाम की हिफाज़त करने के वादे को भूल गया।

ब) हज़रत मुहम्मद और तौरेत शरीफ़

हम ने पहले ही पढ़ लिया कि कुरआन शरीफ़ का बाईबल मुक़द्दस के ताल्लुक़ में क्या कहना है। अब हम देखेंगे कि हज़रत मुहम्मद खुद इस पर क्या फरमातें है।

अहमद-बिन-सय्यद, इब्ने वहाब, हश्शाम, ज़ैद-बिन-असलम, इब्ने उमर से रवायत है,

“कि चन्द यहूदीं आए और रसूल-अल्लाह को बुलाये गए कफ में जो एक वादी है मदीने में, आप आये उनके पास मदरसे में उन्होने कहा ऐ अबु क़ासिम हममें से एक मर्द ने ज़िना किया है एक औरत के साथ, तो आप उसका फ़ैसला कर दीजिए।फिर उन्होने एक तकिया रख दिया आप के लिए आप इसपर बैठे और फ़रमाया तौरेत शरीफ़ किताब को मेरे पास लाओ और तौरेत लाई गई रसूल-अल्लाह ने फरमाया मै ईमान लाया इसपर और उस शक़्स पर जिसने इसको उतारा फिर फ़रमाया बुलाओ उस शक़्स को जो तुम में सबसे ज़्यादा इल्म रखता हो। तो एक जवान बुलाया गया बाद इसके ब्यान का रज्म का किस्सा।

Sunan Abu Dawud, Book 38 (Kitab al Hudud), Number 4431, 4434

तो क्या इससे यह मतलब निकाला जाए कि हज़रत मुहम्मद के ज़माने में तौरेत शरिफ़ को बदला हुआ मानकर उस पर ईमान नहीं लाया गया था।

इस हदीस से हम ये सबक ले सकते हैं।

1) हज़रत मुहम्मद के हाथों में तौरेत शरीफ़ की असली जिल्द रखी गई थी, जो उनके ज़माने में खुले आम पढ़ी जाती थी। यहूदियों ने कभी भी ऐतराज़ नहीं किया कि हज़रत मुहम्मद के पास जो तौरेत लाई गई वह उनकी अपनी तौरेत शरीफ़ से मुख़तलिफ़ थी। दर हकीक़त ऐसा हुआ होगा वह तौरेत शरीफ़ यहूदियों की थी, क्योंकि उस वक़्त ना तो हज़रत मुहम्मद और ना तो कोई और अरब उसे इब्रानी ज़ुबान में पढ़ना जानता था। यह किताब खुदा का ला-तबदील कलाम था। अल्लाह-ताआला के कलाम में कोई तबदीली नहीं की गयी थी। (**सूरह यूनुस 10: 94**)

2) हज़रत मुहम्मद का इस तरह से तौरेत शरीफ़ का तलब करना और उसका ऐहतराम करना, आप की उम्मत के लिये आज के ज़माने में एक बहुत बड़ा सबक़ है। हम ने देखा कि तकिये पर हज़रत मुहम्मद ने तौरेत शरीफ को कितने ऐहतराम से लिया कि कहीं उसके साथ बेअदबी न हो जाए। तो क्या अल्लाह के भेजे उस पाक कलाम के साथ हर एक मुसलमान को अदब से पेश आना चाहिए या नहीं।

3) जो ज़िक्र हज़रत मुहम्द ने किया था, "मैं तुम पर ईमान लाया और उस पर जिसने यह इनकिशाफ़ दिया है, वह हर एक मुसलमान के लिए एक नसीहत है कि वो बाईबल मुक़द्दस पर बिना शक किये ईमान ले आए और अपने नबी की क़ायम की गई इस मिसाल को सुन्नत मान कर उस पर चले। तो अब आगे आप कभी यूँ ना फ़रमाइएगा कि मसाहियों के पास वो असली तौरेत नहीं रही।" तो क्या आप इस बात को हज़रत मुहम्मद से बेहतर जानते हैं? जब कि वह खुद उस कलामे मुक़द्दस पर ईमान ले आये थे, जिस कलाम को यहूदी पीढ़ी दर पीढ़ी पढ़ते थे।

(स) सीरत रसूल अल्लाह से पाए गए सुबूत।

कुछ मुसलमान आलिमों का ये भी मानना है कि तौरेत शरीफ़, ज़बूर शरीफ़ और इन्जील शरीफ़ (बाइबल मुक़द्दस)हज़रत मुहम्मद के वक़्त तक तो महफूज़ थीं , मगर बाद मे लोगो नें उन्हें तबदील कर दिया।

हज़रत मुहम्मद की पैदाइश 6 और 7 सौ ईसवी सन् के दौरान हुई थी। मगर हमारे पास बाईबल मुक़द्दस की वो जिल्दे आज भी सही सलामत महफूज़ हैं जो हज़रत मुहम्मद की पैदाइश से पहले और उनकी वफ़ात के बाद की हैं। आसारे-क़दीमा इस बात को साबित कर चुका है कि जिस तौरेत शरीफ़, ज़बूर शरीफ़ और इन्जील शरीफ़ का ज़िक्र कुरआन शरीफ़ में आता है, यह वही किताबें हैं जो आज भी बाईबल मुक़द्दस में शामिल हैं।

इस बात की तसदीक़ जनाब इब्ने इसहाक़ भी देते हैं। ये वह शख्श हैं जिन्होंने हज़रत मुहम्मद की सवानेह उमरी या सिरात सब से पहले लिखी थी। उन्हीने साफ़ तौर से शिनाख्त दी है कि जिस इन्जील शरीफ़ का जिक्र कुरआन शरीफ़ में आया है उसी को ईसाई 'नया अहेदनामे' का नाम देकर मुख़ातिब करते हैं।

उन बातों में से जो बातें मुझे बताई गई हैं जिन्हें ईसा इब्ने मरयम ने इन्जील में फ़रमाया है जो खुदा की तरफ़ से आप पर नाज़िल हूई जो इन्जील शरीफ़ में दर्ज हैं, ताकि मैं खुदा के इस नबी की सिफ़ात के बारे में कैसे बयान करूँ तो यह बात वहाँ से है जब **रसूल यूहन्ना ने हज़रत ईसा की उम्मत वालों के लिये वो सारे ऐहकाम ईसा इब्ने मरयम के अहेदनामे के वसीले से इस इन्जील शरीफ़ में दर्ज किये**।'' (इब्ने इसहाक़ की सीरत रसूलअल्लाह)

(Ibn Ishaq's "Sirat Rasulallah", translated as "The Life of Muhammad", by A. Guillaume, Karachi: Oxford, 1998, pp. 103-104, bold added)

हम देखते हैं किस ऐतमाद के साथ जनाब इब्ने-इसहाक़ यहाँ रसूल यूहन्ना और उनकी दर्ज की गई इन्जील शरीफ़ का हवाला देते हैं, "यह यूहन्ना के बयान हैं जो नये अहेदनामे का एक हिस्सा हैं, जिसे ईसाई इन्जील शरीफ़ कहकर मुख़ातिब करते हैं।"

हम ने अब तक यह देखा कि ना तो कुरआन शरीफ़ और ना तो हज़रत मुहम्मद ने कहीं भी यह इशारा किया कि बाइबल मुक़द्दस (तौरेत शरीफ़, ज़बूर शरीफ़ और इन्जील शरीफ़) किसी भी तरह से बदल दी गई हैं। हम अपने मुसलमान भाईयों से यह सवाल पूछते हैं, **कि वह हमें कुरआन शरिफ़ और हदीस या हज़रत मुहम्मद के दौर की ऐसी कोई भी लिखी हुई आयात दिखाएँ जहाँ ये लिखा हो कि "तौरेत शरीफ़, ज़बूर शरीफ़ और इन्जील शरीफ़ बदल दी गई हैं और अब वो क़ाबिले यक़ीन नही रहीं।"** क्या आप हमें साफ़गोई, बिला-शुबह और वाज़े तौर पर लिखी हुई ऐसी आयत बता सकते है?

ड) बाइबल मुक़द्दस के बदले जाने का ख़याल कहॉ से आया।

शुरु शुरु में जो मुसलमान थे उन्होंने कभी भी ऐसा ख़याल ज़ाहिर नहीं किया कि तौरेत शरीफ़, ज़बूर शरीफ़ और इन्जील शरीफ़ को इनके मानने वालों ने तबदील कर दिया है, जिस तरह से आज के मुसलमान भाईयों का मानना है। मगर आज के मुसलमान भाईयों के पास कोई ठोस सुबूत भी तो नहीं है कि तौरेत शरीफ़, ज़बूर शरीफ़ और इन्जील शरीफ़ (बाइबल मुक़द्दस) बदल दी गई हैं।हज़रत मुहम्द के बाद गुज़री चार सदियों के दौरान (600-1000 ईसवीं) कोई भी ऐसा क़ाबिल मुआल्लिम या इलमेदीन मुसलमान नहीं था जिसने संजीदगी से यह हुज्जत की हो, कि बाइबल की कोई भी किताब असली नहीं रही।

बाइबल मुक़द्दस को झुठलाने का काम शुरु हुआ इब्ने काज़िम नाम के एक मुसलमान से [वफात 1064 ईसवी, मुक़ाम कोरडोबा]। इब्ने काज़िम ने क़ुरआन शरीफ़ की इस आयत का हवाला देकर क़ुरआन शरिफ़ और बाइबल मुक़द्दस के दरमियान एक इख़्तिलाफ़ खड़ा कर दिया।

*"और उनके इस कहने पर कि हमने मसीह ईसा इब्ने मरीयम अल्लाह के रसूल को शहीद किया और ये कि उन्होंने न उसे क़त्ल किया और न उसे सूली दी।" **(सूरह निसा 4 : 157** कंजुल ईमान)*

क़ुरआन शरीफ़ को हर हाल में सच्चा साबित करने की ख़ातिर इब्ने काज़िम ने ये जरूरी समझा कि बाइबल को ग़लत साबित किया जाए क्योंकि बाइबल कहती है कि हज़रत ईसा सलीब पर मरे थे। लेकिन क़ुरआन शरीफ़ की उपर दी गई आयात यह कहती हैं कि हज़रत ईसा को ना क़त्ल किया गया और ना तो सूली दी गई।

मगर हज़रत मुहम्मद ने अपनी उम्मत से फ़रमाया है कि इन्जील शरीफ़ का ऐहतराम करना लाज़िम है।तो इस बात से इब्ने काज़िम ने ये नतीजा निकाला कि शायद आज की इन्जील शरीफ़ ईसाइयों के हाथो बदली जा चुकी है।" उनका यह दावा पुख़्ता तवारीख़ी सुबूतों पर क़ायम नहीं है, बस यह उनकी अपनी समझ और ख़्वाहिश थी कि इस तरह क़ुरआन को महफ़ूज़ रखा जाए। एक बार इस तरीक़ेकार को अपना लेने के बाद, कोई भी हवाला उन्हें इस इल्ज़ाम को वापस लेने से रोक नहीं पाया। असल में अपनी मुख़ालिफ़त करने वालों पर वार करने का यह सबसे आसान तरीक़ा था।उन्होंने सोचा "जब हम उनकी मज़हबी किताबों को झूठा साबित कर देते हैं, तब वह उन किताबों के हवाले का सहारा नहीं ले पायेंगे।"

और उन्होंने ये ग़ैर मुअतबर बयान दिया: "ईसाइयों ने आसमान से उतरी इन्जील शरीफ़ को खो दिया, बस उस में कुछ आयात ही बच पाई हैं, जिन्हें खुदा ने उनके खिलाफ़ एक गवाही के तौर पर रख छोड़ा है।"

और इनके बाद लिखनेवालों ने इसी ख़्याल को बढ़ा चढ़ाकर बहस करने की एक वजह बना दिया। बाइबल मुक़द्दस पर लगी इस झूठी तोहमत को वसूक़ से पेश किया है: जनाब सलिक इब्ने-अल-खुसैन (वफ़ात **1200** ईसवीं)।अहमद अत-कराफ़ी (वफ़ात **1285** ईसवीं)।सईद इब्ने-ख़सान (वफ़ात **1320** ईसवीं)। मो. इब्ने-तालिब (वफ़ात **1327** ईसवीं)। इब्ने-तैमीज़ा (वफ़ात **1328** ईसवीं)।

और इन के एलावा कई और भी थे। और तब से लेकर आज तक मुसलमान मुअल्लिमों के लिए ये एक बना बनाया इख़्तिलाफ़ का मुद्दा बन चुका है।

कई ऐसे मौतबर मुसलमान आलिम हैं जो यह कभी नहीं मानते कि बाइबल में तबदीलियाँ लाई गई हैं, और आज जिस इन्जील को हम पढ़ते हैं उसे वो बिल्कुल सही मानते हैं।

अली अल-तबारी (वफ़ात **855** ईसवी) इन्जील को सही मानते थे।
अम्र अल-ग़ाकिज़ (वफ़ात **869** ईसवी) इन्जील को सही मानते थे।

बुख़ारी (वफ़ात **870** ईसवी) इन्जील को कुबूल करनेवाले आलिम थे, आप ने इस्लाम की शुरूआती रवायतों को जमा किया और कुरआन के हवाले से ही बाइबल पर जो उनका अपना ईमान था उसे साबित किया।देखिये (सूरह आलि इमरान **3: 72,78**)

अल-मसूदी (वफ़ात **956** ईसवी) इन्जील को सही मानते थे।

अबु अली-हुसैन बिनसिना (वफ़ात **1037** ईसवी) इन्जील को सही मानते थे।

अल-गज़ाली (वफ़ात **1111** ईसवी) इन्जील को सही मानते थे। (बिल शूभा उन जबरदस्त मुसलमान आलिमों में से एक थे, हालाकि वो इब्ने क़ाज़िम के बाद थे मगर उन्होंने उनकी तालीमात को नामंजूर किया)

इब्ने ख़लदून (वफ़ात **1406** ईसवी) इन्जील को सही मानते थे। (वह भी इब्ने क़ाज़िम के बाद वाले दौर के है , मगर वह उनके ख़्यालात और तालीम से मुत्तफ़िक़ नहीं थे)

सर सय्यद अहमद ख़ान, जिन्होंने अलिगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी की बुनियाद रखी थी फ़रमाते हैं; हम मुसलमानों की राय में यह साबित नहीं हो पाया है

कि बाइबल मुक़द्दस में तहरीफ़-ए-लफ्ज़ी यानि लफ्ज़ों की तबदीली की गई है।

जनाब फ़क़रूद्दिन राज़ी, हज़रत मोहम्मद के भतीजे हज़रत इब्ने अब्बास के हवाले से बताते हैं: यहूदियों और ईसाईयों को लेकर यह शुबह था कि उन्होंने तौरेत शरीफ़ और इन्जील शरीफ़ में तबदीलियाँ पैदा की है, मगर मुअल्लिमों और इल्मेदीन के माहिर लोगों की राय में इन किताबों में कुछ भी बदलना मुमकिन नहीं था। क्योंकि यह सहीफ़े लोगों को हिफ़्ज़ थे और दूर-दूर तक इनकी शोहरत जा चुकी थी, और इन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी पढ़ा जाता था, और ख़ानदान दर ख़ानदान इन्हें महफूज़ रखा गया था।

मुसलमान भाईयों को आज इस सवाल का जवाब जुरूर देना चाहिए कि आख़िर आप क्यों मानते हैं कि बाइबल मुक़द्दस तबदील हो चुकी है, जब कि ना तो हज़रत मुहम्मद और ना आपके सहाबी और ना औलिया और अंबिया ये बात मानते थे। अब आपको ये फ़ैसला करना है कि ये लोग सही थे या कि इब्ने क़ाज़िम।

आखिर में हम एक और मुसलमान आलिम की बात आगे रखते हैं।

क्योंकि यहूदियों और ईसाइयों के मुस्तनद सहीफ़े आज भी उसी तरह मेहफूज़ हैं जिस तरह हज़रत मुहम्मद के ज़माने में थे, तो इस बात पर बहस करना मुश्किल है कि जो कुरआन शरीफ़ का इशारा तौरेत शरीफ़ और इन्जील शरीफ़ की जानिब है, वह सिर्फ़ उस 'असली' तौरेत शरीफ़ और उस इन्जील शरीफ़ की तरफ़ है जो हज़रत मूसा और हज़रत ईसा के दौर में हुआ करती थीं। अगर देखा जाए तो यह किताबें आज भी वैसी ही हैं, जैसी वह हज़रत मोहम्मद के दौर यानि सातवीं ईसवीं में थी। तब तो जो

ऊँचा मर्तबा कुरआन शरीफ़ ने इनको दिया है, तो वैसा ही मुक़ाम उनका आज भी होना चाहिए। तबारी से लेकर राज़ी तक और इब्ने तैमिय्या से लेकर. कुतुब तक, जो जो कुरआन शरीफ़ की तफ़सीरें पाई जाती हैं, वह भी इस बात से पूरी तरह मुत्तफ़िक़ हैं। यहूदियों और ईसाइयों कि इल्हामी किताबों को पूरी तरह से इन्कार करने का जो फ़ैसला आज के मुसलमान भाईयों ने अपनाया है, उसे ना तो कुरआन शरीफ़ या उसकी तफ़सीरों के हवाले से कोई मदद मिलती है। हमें अब भी आगे चलकर बहुत सारी तहक़ीक़ात करने की जुरूरत पेश आएगी, ताकि हम यह पुख़्ता तौर पर जान सकें कि जो तहरीफ़ के अक़ीदे की पेचीदगी और इस तहरीफ़ की तालीम कैसे मुआशराती, सियासी और ज़ेहनी इबारत की सूरते हाल इस्लाम में पैदा हुई।

(The charge of Distortion of Jewish and Christian Scriptures by saeed, Abdullah Muslim World; Fall 2002, vol. 92 Issue 3/4 p.419)

तो इस तरह बाइबल मुक़द्दस को एक इल्हामी और लातबदील और कभी ना ग़लत साबित होनेवाली किताब मानकर उस पर ईमान लाया जा सकता है। अज़ीज़ कारयीन, हम तैह दिल से चाहते हैं कि आप भी इस हक़ीक़त को जानें और अपना फ़ैसला सच की बुनियाद को मद्दे नज़र रखते हुए लें।

अब हम चलते हैं अपने अगले मज़मून पर जो है **इस्लाम में और ईसाइयत में खुदा का तसव्वुर क्या है।**

2 - इस्लाम और ईसाईयत में खुदा का तसव्वुर कैसा है?

कुरआन शरीफ़ में फ़रमाया गया है कि खुदा एक है और उसका ना तो कोई साथी है और ना तो कोई बीवी, और जो शख़्स उसके साथ किसी को जोड़ता है वह शिर्क करता है जिसकी कोई माफ़ी नहीं है।

لَّقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُواْ إِنَّ اللّهَ ثَالِثُ ثَلاَثَةٍ وَمَا مِنْ إِلَـهٍ إِلاَّ إِلَـهٌ وَاحِدٌ وَإِن لَّمْ يَنتَهُواْ عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُواْ مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

''बेशक काफ़िर हैं जो कहते हैं अल्लाह तीन ख़ुदाओं मे का तीसरा है और ख़ुदा तो नहीं मगर एक ख़ुदा और अगर अपनी बात से बाज़ न आये तो जो इनमे काफ़िर मरेंगे उनको ज़रूर दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा।''

(सूरह माइदा 5: 73 कंज़ुल ईमान)

وَإِذْ قَالَ اللّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنتَ قُلتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَـهَيْنِ مِن دُونِ اللّهِ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ إِن كُنتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلاَ أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ إِنَّكَ أَنتَ عَلاَّمُ الْغُيُوبِ

''और जब अल्लाह फरमायेगा ऐ मरयम के बेटे ईसा क्या तूने लोगों से कह दिया था कि मुझे और मेरी माँ को दो ख़ुदा बना लो अल्लाह के सिवा अर्ज़ करेगा पाकी है तुझे मुझे रवा नहीं कि वो बात कहूँ जो मुझे नहीं पहुँचती अगर मैंने ऐसा कहा हो तो ज़रूर तुझे मालूम होगा तू जानता है जो मेरे जी

में है, और मैं नहीं जानता जो जो तेरे इल्म में है बेशक तू ही है सब ग़ैबों का खूब जानने वाला।" ***(सूरह माइदा 5: 116** कंज़ुल ईमान)*

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لاَ تَغْلُواْ فِي دِينِكُمْ وَلاَ تَقُولُواْ عَلَى اللّهِ إِلاَّ الْحَقِّ إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللّهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِّنْهُ فَآمِنُواْ بِاللّهِ وَرُسُلِهِ وَلاَ تَقُولُواْ ثَلاَثَةٌ انتَهُواْ خَيْرًا لَّكُمْ إِنَّمَا اللّهُ إِلَهٌ وَاحِدٌ سُبْحَانَهُ أَن يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَات وَمَا فِي الأَرْضِ وَكَفَى بِاللّهِ وَكِيلاً

"ऐ किताब वालों अपने दीन में ज़्यादती न करो और अल्लाह पर न कहो मगर सच मसीह ईसा मरियम का बेटा अल्लाह का रसूल ही है और उसका एक कल्मा कि मरियम की तरफ भेजा और उसके यहाँ की एक रूह तो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और तीन न कहो बाज रहो अपने भले को अल्लाह तो एक ही खुदा है पाकी उसे इससे कि उसके कोई बच्चा हो, उसी का माल है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में और अल्लाह काफ़ी कारसाज़।" ***(सूरह निसा 4: 171** कंज़ुल ईमान)*

जनाब यूसुफ अली ने अपने तर्जुमें में जानबूझकर तीन के बदले 'ट्रिनिटी' लिखा है।

यहाँ हम एक बड़ी भारी मुश्किल का सामना करते हैं क्योंकि कुरआन शरीफ़ में 'ट्रिनिटी' का जो मतलब निकलता है, वह ईसाईयत के अक़ीदे के मुताबिक़ हरगिज़ नहीं है। कुरआन के लिहाज़ से ईसाईयों के ट्रिनिटी में अल्लाह, बेटा और माँ (यानि बीवी मरियम) शामिल हैं, अब सवाल ये

उठता कि कुरआन इस नतीजे पर कैसे पहुँचा कि ईसाई ऐसा ग़लत और बेहूदा अक़ीदा रखते हैं, कि हज़रत ईसा मसीह की पैदाइश अल्लाह और बीवी मरियम की मुबाशरत का नतीजा है। ईसाईयों ने कभी भी इस ख़्याल को कुबूल नहीं किया बल्कि उसकी मज़म्मत की है, और आज भी करते है। ना तो बाइबल मुक़द्दस में कहीं पर भी ऐसा लिखा है कि ख़ुदा की कोई बीवी है और उसने कोई बेटा जना, यानि हज़रत ईसा मसीह। ना तो बाइबल कहीं पर भी कहती है कि 'ट्रिनिटी' का मतलब है बाप, माँ और बेटा। हज़रत ईसा ने कभी भी ऐसा ज़ाहिर नहीं किया कि बीवी मरियम माबूद हैं। क्योंकि ऐसा कुछ भी मानना ईसाईयत में कुफ़्र माना जाता है।

अगर ईमानदारी से देखें तो कुरआन शरीफ़ ने इन्जील के तसव्वुर से ईसा मसीह को 'ख़ुदा का बेटा' मानने पर ऐतराज़ नहीं किया है। मगर इतना है कि वह इस ग़लत तालीम को कुबूल करने से परहेज़ करता है जिसे ईसाई भी गलत मानते हैं।

लफ्ज़े 'ख़ुदा का बेटा' बाइबल मुक़द्दस में कभी भी इन्सानी या जिस्मानी रिश्ते के मुताबिक़ इस्तेमाल नहीं किया गया है। (इस पर हम अगले मौज़ू में कुछ ख़ास तौर पर देखेंगे।)

बाइबल मुक़द्दस में जो ख़ुदा का तसव्वुर पेश किया गया है उसे सही तौर पर समझना हमारे लिए ज़रूरी है। बाइबल मुक़द्दस में कहीं पर भी ऐसा नहीं लिखा है, ''अल्लाह तीन माबूदो में से एक है'' या ''ख़ुदा गिनती में तीन हैं।'' मगर बाइबल मुक़द्दस में हम यही लिखा पाएंगे कि ख़ुदा एक

है। खुदा की ज़ात एक है। (बाइबल मुक़द्दस - इसतिशना **4: 35** और **6: 4**, मरकुस **12: 29**, युहन्ना **17: 3, 1** कुरिन्थियों **8: 4,6**)।

अगर बाइबल मुक़द्दस में यही फ़रमाया जा चुका है कि खुदा की ज़ात एक है, तब यह शिकवा शिकायत किस बात का? तो इस ग़लतफ़हमी का ताल्लुक़ दरअसल खुदा के तसव्वुर से है, जो कि ईसाइयों की चन्द जमातों में भी पाया जाता है। कहीं पर भी बाइबल मुकद्दस में ऐसा नहीं लिखा है कि तीन खुदा हैं, या फिर तीन मुख़्तलिफ़ खुदादाद हस्तियाँ गोयाके अल्लाह, ईसा और मरियम, क्योंकि यह ख़्याल तो सरासर कुफ्र है।

अ) बाइबल मुक़द्दस में खुदा का तसव्वुर

बाइबल मुक़द्दस में खुदा का कैसा तसव्वुर पेश किया गया है? बाइबल मुक़द्दस के आलिम इसे कुछ इस तरह से पेश करते हैं, कि सिर्फ़ एक अज़ली और अब्दी हसती है। 'खुदा की यह वाहिद हस्ती तीन बराबरी की कुदरत रखनेवाली अज़ली और अब्दी एक ही खुदा की ज़ात है, यानि बाप, बेटा और रूहुल कुद्दुस।

यहाँ पर यह समझ लेना बेहद ज़रूरी है कि 'हस्ती' या 'ज़ात' और 'शख़्स' में क्या फ़र्क़ होता है। ज़ाहिर है यूँ कहना किसी तज़ाद का बायस बन सकता है, कि एक हसती में तीन हसतियाँ हैं, या एक शख़्स में तीन शख़्स हैं, तो फिर इन में फ़र्क़ क्या है? हम अपनी रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी की बातों से समझ लेते हैं कि 'हसती' या 'ज़ात' और 'शख़्स' में क्या फ़र्क़ होता है।

हम जानते हैं कि कोई भी एक चीज़ (माद्दा) क्या होती है। फिर भी हम किसी एक या मुनफ़रिद को उसकी ज़ात से पहचान पाते हैं।तो मिसाल के तौर पर हम बात करते हैं आदम ज़ात की। एक पत्थर की अपनी एक ज़ात या अपना माद्दा होता है। पत्थर के एलावा कुत्ते बिल्ली की अपनी अपनी ज़ात होती है, और हम यह भी जानते हैं कि हर ज़ात में उसकी अपनी सिफ़तें भी होती हैं, तब कहीं जाकर हम दोनों को यानि ' क्या है' (माद्दा और हस्ती या ज़ात), और वह 'कौन है' (एक या मुनफरिद) को पहचान जाते हैं जब भी हम किसी शख़्स या चीज़ की बात करते हैं।

बाइबल मुक़द्दस हमें बताती है कि ऐसी तीन मुख़्तलिफ हस्तियाँ हैं जिनकी अपनी एक ज़ात है - खुदा, इंसान और फरिश्ते। पहले हम जान लें कि शख़्सियत होती क्या चीज हैं? शख़्सियत वह होती है जिस में जज़बात होते हैं, यानि अपनी मनशा या राय होना और अपनी बात कहना। पत्थर बोल नहीं सकते, कुत्ते बिल्ली की अपनी समझ नहीं होती ना तो वह दूसरों का ख़्याल करते हैं, यानि कि बिल्ली या कोई जानवर किसी दूसरे का भला बुरा नहीं सोच सकते। तो हम यहाँ ऐसा कहते हैं कि एक अब्दी ला-महदूद खुदा की वह पाक ज़ात है जो पूरी और मुकम्मल तौर पर तीन मुख़्तलिफ शख़्सियतों (बाप, बेटा और रूहुल कुद्दुस) में मौजूद है। एक यानि 'क्या' (जात या माद्दा) और तीन यानि 'वो' (इन्फिरादियत या शख़्सियतें हैं)।

ज़रा ग़ौर फ़रमाऐं: हम यह नहीं कहते कि बाप ही बेटा है, और बेटा ही रूहुल कुद्दुस है, और रूहुल कुद्दुस ही बाप है। लोगों के लिये इसे ग़लत समझ लेना आम है, कि हम ईसाई ऐसा मानते और कहते हैं कि हज़रत

ईसा ही बाप हैं। ट्रिनिटी का अक़ीदा किसी भी तौर से ऐसा नही कहता, ट्रिनिटी के वसी समुदंर में बहकर आनेवाले बाइबल मुक़द्दस के वह तीन अक़ीदे इस तरह से हैं:

1) सिर्फ एक और वाहिद अकेली ख़ुदा की ज़ात है जो अव्वल से अबद तक लातबदील है।

2) कलामे इलाही के वसीले से इन तीन अबदी हस्तियों का जिक्र होता है, बाप, बेटा और रूहुल क़ुदुस।

3) बाप, बेटा और रूहुल क़ुदुस में पूरी तौर से इलुहियत की पहचान मिलती है। यानि बाइबल मुक़द्दस यह दावा पेश करती है ईसा मसीह और रूहुल क़ुदुस दो ख़ुदादाद हस्तियाँ हैं।

डॉ. जेम्स वाईट

(http://vintage.aomin.org/trinitydef.html)

इसे दूसरी तरह से कहा जाए तो, मैं एक ऐसी हस्ती हूँ जिसके शऊर का एक ही मरकज़ है, और मेरी हस्ती या मेरा माद्दा, आदम ज़ात कहलाता है। ख़ुदा की भी एक हसती है और उसकी हस्ती या माद्दा, ख़ुदादाद है, जो अज़ल से अबद तक शऊर के तीन मरकज़ो में मौजूद है, गोयाके उसके शऊर के तीन मरकज़ हैं, यानि बाप, बेटा और रूहुल क़ुद्दुस।

अगर हम ऐसा कहते हैं, खुदा तो एक है और उसी के साथ साथ वह तीन है, तब तो यह तज़ाद होगा, या फिर हम यूँ कहें कि खुदा तीन हैं और साथ साथ एक हैं तब भी यह तज़ाद होगा। मगर जब हम कहें कि खुदा की ज़ात एक है जो अपनी सिफ़्तों, रूह और कुदरत के साथ शऊर के तीन मरकज़ो में या शख़्सियतों में मौजूद है, तो यह तज़ाद नहीं होगा। जी, इसे समझना मुश्किल तो है, मगर मनतखी़ तज़ाद किसी भी हाल में नहीं हो सकता।

जब जब हम कुरआन शरीफ़ पढ़ते हैं, तब तब हमारी समझ में आया है कि कुरआन शरीफ़ ईसाईयत के बुनियादी अक़ीदे के ख़िलाफ नहीं है, बल्कि एक ऐसे कुफ़ और शिर्क की मुख़ालफ़त करता है जिससे ईसाई बज़ाते खुद राज़ी नहीं हैं।

ब) कुरआन शरीफ़ में तीन खुदादाद और अबदी हस्तियों की मौजूदगी

जिन में पहला खुद अल्लाह है और दूसरे का ज़िक्र कुरआन शरीफ़ करता है वह खुदा का कलाम है। इसे पैदाईश का कलाम या खुदा का हुक्म कहा गया है।

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَن نَّقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ

*"जो चीज़ हम चाहें उससे हमारा फ़रमाना यही होता है कि हम कहें होजा वो फौरन हो जाती है।" (**सूरह नहल 16: 40** कंजुल ईमान)*

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ

"उस का काम तो यही है कि जब किसी चीज़ को चाहे तो उससे फ़रमाए हो जा वो फ़ौरन हो जाती है।" ***(सूरह यासीन 36: 82*** *कंजुल ईमान)*

जहाँ तक **36: 82** का ताल्लुक़ है, "द होली कुरआन/ ट्रान्सलेशन ऐण्ड कॉमेन्ट्री" में यूसुफ़ अली अपने फुटनोट नंबर **4028** में कलाम की तफ़सीर कुछ इस तरह से बयान करते हैं: "जिस लम्हे वह (खुदा) कुछ चाहता है, वही चाहत उसका कलाम या हुक्म बन जाता है, और वह चीज़ वजूद में आ जाती है।"

बाइबल मुक़द्दस भी कुछ इसी तरह से बयान करती है कि चीज़ें कलामे इलाही के ज़ोर पर ख़ल्क हो जाती हैं। अगर मान लीजिये कलामे इलाही या खुदा के कलाम से हर चीज ख़ल्क होती है, तब तो यह साफ़ है कि कलाम कभी भी ख़ल्क नहीं हुआ, क्योंकि यह वह ज़रिया है जिससे सबकुछ ख़ल्क हुआ है। इसी वजह से कई मुआल्लिम इस बात से मुत्तफ़िक़ हैं कि कलामे इलाही या खुदा का कलाम पैदा या ख़ल्क नहीं हुआ। इस तरह जब खुदा का कलाम कभी ख़ल्क नहीं हुआ और जहांन के ख़ल्क होने के क़ब्ल से था, तब तो वह अज़ल से है और इसीलिये वह इलोहियत का मालिक है, इस माकूल बयान से हम अपने मुसलमान दोस्तों को बताना चाहेंगे कि हज़रत ईसा मसीह ना सिर्फ़ इन्सानी तबियत रखते थे बल्कि उन में इलोहियत की तबियत भी बरक़रार थी, क्योंकि बाइबल मुक़द्दस और कुरआन शरीफ़ बिला शुभा उन्हें खुदा का कलाम मानकर मुख़ातिब करते हैं जैसा कि हम ने पहले भी समझाने की कोशिश की है, इब्ने इसहाक़ की

लिखी 'सीरत रसूलअल्लाह' (जिसका तर्जुमा 'द लाइफ ऑफ मुहम्मद' नाम की किताब में हुआ है) में रसूल यूहन्ना की लिखी हुई इन्जील शरीफ़ का ज़िक्र करते हैं, जिस में यूँ बताया गया है।

"इब्तिदा में कलाम था और कलाम खुदा के साथ था और कलाम ही खुदा था। कलाम शुरू में खुदा के साथ था। सब चीज़े उसी के वसीले से पैदा की गई और कोई चीज़ भी ऐसी नहीं जो उसके बग़ैर वजूद में आई हो।

"और कलाम मुजस्सिम हुआ और फज़ल और सच्चाई से मामूर होकर हमारे दरमियान रहा और हमने उसका ऐसा जलाल देखा जैसा बाप के इकलौते का जलाल।" ***(यूहन्ना की इन्जील 1: 1-3, 14)***

खुदा का कलाम (कलिमा) एक इन्सानी शक्ल में ईसा मसीह बनकर मुजस्सिम हुआ।

और वह तीसरी हसती या शख़्सियत जिसका जिक् कुरआन शरीफ़ में आया है, वह है रूहुल कुदुस या रूहे इलाही।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءهُمْ أَوْ أَبْنَاءهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُوْلَئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِّنْهُ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ أُوْلَئِكَ حِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

*"तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते है अल्लाह और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से मुख़ालिफ़त की अगरचे वो उनके बाप या बेटे या भाई या कुनबे वाले हों ये हैं जिनके दिलो में अल्लाह ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी तरफ़ की **रूह से उनकी मदद की और उन्हें बाग़ो में ले जाएगा** जिन के नीचे नहरें बहें उनमें हमेशा रहें अल्लाह उनसे राज़ी और वो अल्लाह से राज़ी ये अल्लाह की जमाअत है।" (**सूरह मुजादला 58: 22** कंज़ुल ईमान)*

'द होली कुरआन के फुटनोट नम्बर **5365** में यूसुफ़ अली ने लिखा है, 'खुदा की जानिब से भेजी गई रूह, या जिसे रूहे इलाही कहते हैं, वह एक खुदादाद रूह है जिसके बारे में हम अपने लफ़्जों में बिल्कुल उसी तरह से बयान नहीं कर सकते जैसे कि हम खुदा की ज़ात और उसकी सिफ़ात को बता नहीं पाते"

*"पाक रूह खुद हमारी रूह के साथ मिल कर गवाही देता है कि हम खुदा के फ़र्ज़न्द हैं।" (**रोमियो 8: 16**)*

अब देखा जाए तो, हम कुरआन शरीफ़ में भी तीन ऐसी उलोहियत की सिफ़ात वाली तीन पाक ज़ात हस्तियों का सबूत पाते हैं- अल्लाह (**खुदा**) अल्लाह का कलाम (**खुदा का कलाम**) और अल्लाह की रूह (**रुहुल कुद्दुस**) वैसे तो यह तीनों एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ तो हैं, मगर एक जैसी तबियत और सिफ़ात से मामूर रहकर एक दूसरे से कभी न अलग होने वाली हस्तियाँ हैं।

(स) तसलीसी ख़ुदा की फ़िलासफ़ियाना ज़रूरत।

अब तहरीर से ख़ुदा का इख़लाक़ी तौर पर बेऐब होना लाज़िम है। इख़लाक़ी तौर पर एक माबूद को मुहब्बत रखनी चाहिये, क्योंकि मुहब्बत न रखने से तो मुहब्बत रखना इख़लाक़ी तौर पर बेहतर बात है, इसलिए ख़ुदा के लिए एक मुकम्मल मुहब्बत रखने वाला माबूद होना लाज़िम है। अगर ख़ुदा मुहब्बत रखता है, तो फिर मुहब्बत करने के लिए दो हस्तियों का होना लाज़मी है, जैसे एक जो मुहब्बत करता है और दूसरा जिस से वह मुहब्बत करता है। इख़लाक़िया तौर पर एक पाक ज़ात माबूद का ख़ुद में कफ़ील (अपने आप में मुकम्मिल) होना लाज़मी है, क्योंकि जब वह ख़ुद ही कफ़ील नहीं होगा तब तो उसे किसी न किसी चीज़ की ज़रूरत पड़ेगी। कोई न कोई कमी की वजह से अगर वह किसी चीज़ का मोहताज है तब तो बह ख़ुद कफ़ील कभी भी नहीं हो सकता, और जब वह अपने आप में मुकम्मल नही है, तब तो वह ख़ुदा बनने के क़ाबिल नही रहा।

अब जैसा कि माना जाता है, ख़ुदा मुहब्बत है तो उसने तमाम आलम और सारी मख़लूक़ को ख़ल्क़ करने से पहले किससे मुहब्बत की थी? क्योंकि मुहब्बत निभाने में दो हस्तियों का होना लाज़मी होता है।एक मुहब्बत करने वाला और दूसरा जिससे वह मुहब्बत करता है।अब क़ाबिले ग़ौर बात यह है कि अगर ख़ुदा को अपनी मुहब्बत ज़ाहिर करने की ख़ातिर मजबूर होकर कुछ ख़ल्क करना पड़ता है, तब तो वह ख़ुद कफ़ील बनने से रह जाता है, क्योंकि अपनी मुहब्बत जाहिर करने की ख़ातिर उसने तमाम आलम बनाया, और ऐसा करके उसने अपनी मजबूरी जाहिर की और यही

मजबूरी खुदा का माबूद होने से इख़्तेलाफ करती है, क्योंकि खुदा को खुद में मुकम्मल होना चाहिये।

यहाँ पर ईसाईयों का यह तसव्वुर पूरी तौर पर वाजिब और मुकम्मल है कि खुदा वह हसती है, जो शऊर के तीन मरकज़ों में मौजूद है और अज़ल से अबद तक बाप, बेटा और रूहुल कुद्दुस में बसा है और जब हम खुदा की मुहब्बत करने वाली सिफ़त की बात करते हैं, तो ये तीनो एक दूसरे से अज़ल से (जब यह आलम नहीं था) मुहब्बत करते आए हैं। और यही ज़ाहिर करता है कि खुदा की ज़ात इख़लाक़ी तौर पर बे अैब और खुद कफ़ील है।

अज़ीज़ों, हम चाहते हैं कि आप यह जान जाँए कि कोई भी ईसाई यह नहीं कुबूल करता है कि अल्लाह, मरियम और ईसा में एका है, या यही वो ट्रिनिटी हैं। खुदा का एक शऊर जो तीन मुख़्तलिफ़ मरकज़ों में मौजूद है, वही तो खुदा बाप, ईसा और रूहुल कुद्दुस है। खुदा की इस ज़ात को समझना तो बेहद मुश्किल है मगर इसमें तज़ाद नहीं है यहाँ तक कि इस्लाम में भी खुदा की ज़ात को जानना नामुमकिन है। ईसाई ऐसा मानते हैं कि जो कुछ इनकिशाफ़ बाईबल में उतारा गया है और जो कलाम, मनतक़ और फ़लसफ़े की रोशनी में ज़ाहिर होता है, कि खुदा की ज़ात का तीन हस्तियों में होना बिल्कुल समझ के लायक़ है।

3 - हज़रत ईसा मसीह - खुदा का बेटा

हमारे अज़ीज़ मुसलमान दोस्त हमेशा दावा करते हैं कि हज़रत ईसा मसीह खुदा के बेटे हरगिज़ नहीं हो सकते ।बल्कि वो मानते हैं कि हज़रत ईसा सिर्फ़ एक नबी थे और इसके इलावा कुछ नहीं। उनका ईमान है की अल्लाह ना तो खुद पैदा हुआ और ना तो उससे कोई पैदा हुआ है।

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ اللَّهُ الصَّمَدلَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدوَلَمْ يَكُن لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ

*''तुम फ़रमाओ वो अल्लाह है वो एक है। अल्लाह बे नियाज़ है। न उसकी कोई औलाद और न वो किसी से पैदा हुआ। और न उसके जोड़ का कोई।" (**सूरह इख़्लास 112: 1-4** कंज़ुल ईमान)*

بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ أَنَّى يَكُونُ لَهُ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُن لَّهُ صَاحِبَةٌ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ وهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

*"बिना किसी नमूने के आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला उसके बच्चा कहाँ से हो हालाकि उस की कोई औरत नहीं और उसने हर चीज़ पैदा की और वो सब कुछ जानता है। (**सूरह अन्आम 6: 101** कंज़ुल ईमान)*

وَقَالُواْ اتَّخَذَ اللّهُ وَلَدًا سُبْحَانَهُ بَل لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ كُلٌّ لَّهُ قَانِتُونَ

*"और बोले खुदा ने अपने लिए औलाद रखी पाकी है उसे बल्कि उसी की मिल्क है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब उसके हुज़ूर गरदन डाले है। (**सूरह बक़रा 2: 116** कंज़ुल ईमान)*

وَأَنَّهُ تَعَالَى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا

"और ये कि हमारे रब की शान बहुत बुलन्द है न उसने औरत इख़्तियार की और न बच्चा। ***(सूरह जिन्न 72 : 3*** *कंज़ुल ईमान)*

इन सब आयतों से ये ज़ाहिर होता है कि अल्लाह का कोई बेटा इसलिये पैदा नहीं हुआ क्योंकि उसकी कोई बीवी नहीं है। क़ुरआन शरीफ़ इस बात पर क़ायम है कि अल्लाह के लिये बेटा पैदा करना तभी मुमकिन होता जब की उसकी कोई बीवी होती जिससे वह मुबाशरत करता।

मगर जब ईसाई, हज़रत ईसा को ख़ुदा का बेटा कहते हैं तो मुसलमान भाई ऐसा सोचते हैं कि ईसाई यूँ मानते हैं कि ख़ुदा की कोई बीवी है जिससे जिसमानी रिश्ता कायम करके ख़ुदा अपने बेटे का बाप बना।

एक सच्चा ईसाई हरगिज़ ये नहीं मानता कि हज़रत ईसा मसीह ख़ुदा के जिसमानी बेटे हैं।और ईसाई लोग यह भी नहीं मानते कि ख़ुदा की कोई बीवी है जिससे उसने जिसमानी रिश्ता बनाया।अब हम मुस्लिम हज़रात से ये सवाल पूछते हैं कि वो हमें बाइबल मुक़द्दस से ऐसी कोई आयत दिखाएँ जिसमे लिखा है कि ख़ुदा पाक ने शादी की या किसी औरत से उसने जिसमानी रिश्ता क़ायम किया जिसके नतीजे में हज़रत ईसा मसीह की पैदाईश हुई।कोई भी सच्चा ईसाई इस तरह का ईमान कभी क़ुबूल नहीं करेगा।तो सवाल ये है कि हज़रत ईसा मसीह ख़ुदा के बेटे कैसे हुए?

हम इसे सही ढंग से समझाना चाहेंगे। हज़रत मुहम्मद के एक मामू थे जनाब अब्दुल उज़्ा, मगर **सूरह** लहब **111: 1** में उनका लक़ब है अबु लहब, यानि 'शोले का बाप'। तो क्या इसके माने यह हुए कि उन्होने किसी से मुबाशरत की और शोला पैदा हुआ। किसी भी राहगीर या सड़क पर चलने वाले को इब्ने-उस-सबील यानि 'सड़क का बेटा' (**सूरह बक़रा 2: 177**) कहा जाता है, गोया की सड़क अपनी बीवी से मुबाशरत करता है जिससे राहगीर पैदा होते हैं - ऐसी कितनी ही मिसालें हैं, मसलन उम-उल-किताब यानि 'किताबों की माँ' (**सूरह रअ़द 13: 39, जुख्रूफ़ 43: 4**), उम-उल-खुरा यानि 'शहरों की माँ' (**सूरह** अन्आ़म **6: 92, शूरा 42: 7**)।

अब ले लीजिये हज़रत मुहम्मद के चचाज़ाद भाई हज़रत अली के इस लक़ब को, अबु तुराब यानि 'मिट्टी का बाप'। हज़रत मुहम्मद के एक सहाबी को अबु-हुरैरा यानि 'बिल्लियों का बाप', ऐसा लक़ब मिला हुआ था, क्योंकि आप को बिल्ली ज़ात से बेहद उनसियत थी। जिस तरह से मिसालों को आम तौर से समझा जाता है, हम मुस्लिम भाईयों से दरख़्वास्त करेंगे कि बाइबल मुक़द्दस में जब हज़रत ईसा मसीह को खुदा का बेटा कहा गया है, उन से वह ऐसा मतलब न निकालें कि उनकी पाक और रूहानी पैदाईश में मुबाशरत का हाथ है। बाइबल मुक़द्दस कहीं पर भी ऐसा नहीं फ़रमाती है कि हज़रत ईसा मसीह खुदा पाक के जिसमानी बेटे हैं, और ना ही कोई सच्चा ईसाई ऐसा कहता है।

ईसा कलिमातुल्लाह - हज़रत ईसा अल्लाह का कलाम

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لاَ تَغْلُواْ فِي دِينِكُمْ وَلاَ تَقُولُواْ عَلَى اللّهِ إِلاَّ الْحَقِّ إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللّهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِّنْهُ فَآمِنُواْ بِاللّهِ وَرُسُلِهِ وَلاَ تَقُولُواْ ثَلاَثَةٌ انتَهُواْ خَيْرًا لَّكُمْ إِنَّمَا اللّهُ إِلَـهٌ وَاحِدٌ سُبْحَانَهُ أَن يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَات وَمَا فِي الأَرْضِ وَكَفَى بِاللّهِ وَكِيلاً

*“ऐ किताब वालों अपने दीन में ज़्यादती न करो और अल्लाह पर न कहो मगर सच मसीह ईसा मरियम का बेटा अल्लाह का रसूल ही है और उसका एक कल्मा (وَكَلِمَتُهُ) कि मरियम की तरफ़ भेजा और उसके यहाँ की एक रूह (وَرُوحٌ مِّنْهُ) तो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और तीन न कहो।” (**सूरह निसा 4 : 171** कंजुल ईमान)*

ये बताने के बावजूद की हज़रत ईसा मसीह बस खुदा के एक पैग़म्बर है, यह आयत इस बात पर ज़ोर दे रही है कि आप खुदा का कलाम भी हैं - क्योंकि यह लक़ब, '**कलिमातुहू**' खुदा के ज़ाती कलाम की तरफ़ इशारा करता है। यह आयत ऐसा दावा करती है कि हज़रत ईसा मसीह अल्लाह की तरफ़ से आई रूह हैं, जिसका हम बाद में खुलासा करेंगे - इसी हक़ीक़त को और मज़बूत बनाने की गरज़ से कि हज़रत ईसा मसीह खुदा का पाक कलाम हैं, ''कुरआन और उसकी तशरीह करनेवाले, volume. II. हाऊस ऑफ इमराम पर नजर डालेंगे:

तबारी, जो एक आलिमे दीन थे कहते हैं (अल सद्दी के हवाले से ये बयान है) कि नसारी के ईसाईयों और हज़रत मुहम्मद के दरमियान हुए एक मुबाहिसे में, हज़रत मुहम्मद से जब पूछा गया कि उनका तास्सुर हज़रत ईसा

मसीह के बारे में क्या है, तब आप ने यह जवाब दिया था, ''वह एक अल्लाह के बंदे हैं, अल्लाह की रूह हैं और अल्लाह का कलाम हैं।'' (Pg 184)

एक और आलिमे दीन, सईद कुतुब ने यूँ फ़रमाया है कि ''लफ़्ज़े मसीह, कलाम के बजाए इस्तेमाल होता है, मगर दर हक़ीक़त आप ही (हज़रत ईसा) कलाम हैं'' (Ibid Pg. 151)

डॉक्टर हस्बुल्लाह बक़री की किताब ''नबी ईसा दलाम अल-कुरआन'' (हज़रत ईसा वह नबी जिनका जिक्र कुरआन में आता है), में यह साफ़ तौर पर लिखा गया है: ''नबी ईसा कलिमातुल्लाह (कलामे इलाही) इस वास्ते कहलाते हैं क्योंकि आप ही वह खुदा का कलाम थे जो मुजस्सिम हुआ, और जो बीबी मरियम पर नाज़िल किया गया था ताकि उन के ज़रिये नबी ईसा पैदा हों।''

ये दोनों मज़हबी जमातें इस बात से सहमत हैं कि खुदा का कलाम अज़ल से लेकर अबद तक खुदा से ना तो जुदा रहा है और ना जुदा रहेगा। क्योंकि खुदा की ज़ात अपनी खुदादाद मर्ज़ी को अपने कलाम के ज़रिये ज़ाहिर करने की क़ाबिलियत रखती है। तो यही बात हज़रत ईसा का अज़ल ही से खुदा से अलग न रहने का सुबूत पेश करती है, क्योंकि बाइबल मुक़द्दस के इस तास्सुर से कुरआन शरीफ़ भी मुतफ़िक़ है कि हज़रत मसीह खुदा का मुजस्सिम कलाम हैं।

इन्जीले पाक यूँ फरमाती है:

“इब्तिदा में कलाम था और कलाम खुदा के साथ था और कलाम खुदा था। यही इब्तिदा में खुदा के साथ था। सब चीजें उसके वसीले से पैदा हुई, और जो कुछ पैदा हुआ है उसमें से कोई चीज़ भी उसके बग़ैर पैदा नहीं हुई

और कलाम मुजस्सिम हुआ और फ़ज्ल और सच्चाई से मामूर होकर हमारे दरमियान रहा और हमने उसका ऐसा जलाल देखा जैसा बाप के इकलौते का जलाल। ***(यूहन्ना की इन्जील 1: 1-3, 14)***

अगर कोई कहे कि मसीह महज़ एक बशर है, तो यह ख़्याल पैदा होता है कि अल्लाह का कलाम एक बशर है। मगर यह तो सरासर कुफ्र होगा, क्योंकि मुसलमान और ईसाई, इस बात से इत्तेफ़ाक़ रखते हैं कि खुदा अपनी तमाम सिफ़तों और अपनी खूबियों के साथ अजल से मौजूद है। और उसे अपने इलावा किसी और चीज़ की जुरूरत नहीं क्योंकि वह लातबदील है। इसीलिये इस सच्चाई को मान लेने के बाद मुस्लिम भाइयों को हर एक सूरत में इस नतीजे पर पहुँचना ही पड़ेगा कि हज़रत ईसा मसीह खुदा का वह अबदी कलाम हैं।

मुसलमान भाई कहते हैं कि “खुदा का कलाम” के पीछे जो माने हैं वह सिर्फ यही हैं कि मसीह खुदा के हुक्म से ख़ल्क हुए और आप खुदा के हुक्म 'कुन-फय्याकुन' (हो जा और वह हो गया) का एक नतीजा हैं।

अपने इस दावे को साबित करने के लिए वह **सूरह *आलि*** इमरान **3: 59** की यह आयत पढ़ते हैं

"ईसा की कहावत अल्लाह के नज़दीक आदम की तरह है उसे मिट्टी से बनाया फिर फ़रमाया होजा वो (कुन-फ़य्याकुन) फ़ौरन हो जाता है।" ***(सूरह आलि इमरान 3: 59*** *कंजुल ईमान)*

तो एक बार फिर से यह दावा बेबुनियाद हो जाता है क्योंकि, अगर यह लक़ब हज़रत ईसा के ख़ल्क किये जाने के सबब दिया गया है, तब तो हज़रत आदम को भी अल्लाह का कलाम कहा जाना चहिये था। फिर भी ना तो हम कुरआन शरीफ़ में और ना कहीं हदीस की किताबों में, हज़रत आदम को "खुदा का कलाम" के लक़ब से मुख़ातिब किया जाता है।

इस से यह नतीजा साफ़ साफ़ सामने आता है कि यह लक़ब, जब जनाबे मसीह से जुड़ता है, तब इसके माने यह हुए कि यह हमारे मुस्लिम भाइयों की सोच और समझ से कहीं बढ़कर मानीख़ेज़ है।

और तब हम मनतख़ी तौर पर उसी नतीजे पर जा पहुँचते हैं, जिस पर खुद रसूल यूहन्ना (**John**) पहुँच चुके थे, जिसे आपने अपनी इन्जील (**Gospel of John**) के नुक़ते आज़ार (शुरूआत) में दर्ज किया है। यानि की हज़रत ईसा मसीह, जो खुदा का कलामे अबदी हैं, जो दरअसल खुदा की ज़ात के मुकम्मल सरचश्में का मुजस्सिम हैं तो वही इलोहियत का आख़री और फ़ैसलाकुन मुकाशिफ़ा हैं। (**यूहन्ना की इन्जील 1: 1-3, 14, 18**)

हज़रत ईसा की पैदाईश

जब मुस्लिम भाइयों से दरयाफ़्त किया जाता है कि हज़रत ईसा मसीह इस बेमिसाल और मौजज़ाती तौर से क्यों पैदा हुए, तो उनका जवाब कुछ इस तरह का होता है: कुँवारी मरियम को बिना किसी मर्द की शिरकत के यूँ हामिला होना, ख़ुदा की हैरतअंगेज कुदरत और हिकमत का एक ज़बरदस्त मुज़ाहिरा है, कि अल्लाह-तआला जो चाहे वह कर सकता है, बस इतना सा कहकर 'कुन-फय्याकुन', **(हो जा और वह हो जाता है)**। मज़हबे इस्लाम में यह ख़्याल रखा जाता है, कि हज़रत ईसा मसीह का एक कुँवारी से पैदा होने का मतलब यह नहीं कि हज़रत ईसा मसीह इलोहियत के मालिक हैं।

मगर हमें हज़रत आदम का ख़ल्क होना और ईसा मसीह की पैदाईश, इन दोनो वारदातों का मसला समझाते हुए इस बात पर ज़ोर देना चाहिए, कि हज़रत आदम का बग़ैर किसी माँ या बाप के पैदा होना लाज़मी था। इसकी हक़ीक़त दरअसल यह थी कि हज़रत आदम के ख़ल्क होने के वक़्त इस ज़मीन पर वह पहले और वाहिद आदमी थे, इसीलिए उनका कुदरती तौर पर मुबाशरत से पैदा होना नामुमकिन था। और यही बात बीवी हव्वा के साथ भी हुई क्योंकि वह पहली औरत जो थीं।

तब भी हज़रत ईसा मसीह का इस तौर पर पैदा होना क्यों कर ज़रूरी था जब कि ख़ुदा ने पहले से ही इन्सानी पैदाईश के तरीक़ेकार को जारी कर दिया था? इस ख़ास मामले में ख़ुदा ने मुबाशरत से पैदा करने के अपने

उसूल को मुसतरद कर के ज़ाती तौर पर मुदाख़लत करके हज़रत ईसा मसीह की पैदाईश एक कुँवारी के ज़रिये क्यों करवाई?

अगर हमारे मुस्लिम भाई इस बात पर तकरार करते हैं कि यह इन्सानों के लिए ख़ुदा की बा-रोब और पुरजलाल क़ुदरत की मिसाल है, तो इसके जवाब में हम यूँ कह सकते हैं, कि यह मिसाल ख़ुदा की अज़ीम ताक़त का मुज़ाहिरा पूरी तरह से नहीं करती। और इस कमी की वजह यह है कि कुँवारी से पैदा होने की बात रिवाजों के तौर पर साबित नहीं की जा सकती है। इस पर सिर्फ़ ईमान लाया जा सकता है, क्योंकि जब फ़रिश्ते ने आकर बीबी मरियम को हज़रत ईसा मसीह की पाक पैदाईश का पैग़ाम सुनाया, तब उस वक़्त वहाँ पर इन दो के इलावा कोई तीसरा शख़्स मौजूद नहीं था।

क़ुरआन शरीफ़ ख़ुद भी इसी बात की तसदीक़ करता है कि उस ज़माने में ऐसे भी लोग थे जिन्होंने बीबी मरियम पर अैब लगाया, और ख़ास तौर से एक और मौजज़ा-ए-वारदात हुई जिसने उनकी बेगुनाही को साबित किया।

فَأَتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ قَالُوا يَا مَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا
يَا أُخْتَ هَارُونَ مَا كَانَ أَبُوكِ امْرَأَ سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكِ بَغِيًّا
فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَن كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا
قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ آتَانِيَ الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا

"तो उसे गोद में लेकर अपनी क़ौम के पास आई बोले ऐ मरियम बेशक तूने बहुत बुरी बात की। ऐ हारून की बहन तेरा बाप बुरा आदमी ना था

*और न तेरी माँ बदकार। इस पर मरियम ने बच्चे की तरफ इशारा किया वो बोले हम कैसे बात करें उससे जो पालने में बच्चा है। बच्चे ने फरमाया मैं अल्लाह का बन्दा हूँ उसने मुझे ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया।" **(सूरह मरयम 19: 27-30** कंजुल ईमान)*

जनाब अब्दुल्लाह यूसुफ़ अली जो कुरआन शरीफ़ का तर्जुमा और तफ़सीर लिख चुके हैं, इसी कहानी के ताल्लुक से बयान करते हैं: "इस मामले में बीबी मरियम भी क्या कर सकती थीं। वह कैसे समझा पातीं? क्या वो लोग उन पर तोहमत लगाते हुए, उनकी बात पर यक़ीन कर लेते? बस तब वह अपने बच्चे की तरफ़ इशारा कर पाईं, जिसके बारे में उनको पता था, कि वह बच्चा कोई मामूली बच्चा नहीं था। और तब वही बच्चा उनकी मदद के लिए मौजज़ाती तौर पर बोल उठा,और अपनी बेऐब माँ की उसने पैरवी की, और इल्ज़ाम तराश हाज़रीन को मनादी की।" **(1: P. 750, F. 2482)**

मसीह की इस मौजज़ाती पैदाईश का जो ख़ास मक़सद था, उसके बारे में यह आयत ख़ामोश है इसका सही जवाब पाने के लिए हमें बाइबल मुक़द्दस का मुताअला करना होगा।

*"मरियम ने फरिश्ते से कहा यह कैसे होगा जबकि मैं किसी मर्द को नहीं जानती। फरिश्ते ने उसे जवाब दिया कि रूहुलकुदुस तुझ पर साया डालेगी इसलिये वह मौलूद-ए-मुक़द्दस खुदा का बेटा कहलाएगा। **(लूका की इन्जील 1: 34-35)***

इस कुँवारी से पैदाईश की वजह यह है कि दरअसल हज़रत ईसा मसीह खुदा पाक के रूहानी बेटे हैं। खुदा का बेटा होने के नाते, उनके पास बस यही एक तरीक़ेकार था हमारे ज़माने और हमारी दुनिया में तशरीफ़ लाने का।

इसके इलावा, हज़रत ईसा मसीह वह हैं जो गुनाहों का वह आख़री और सब से अज़ीम और मुकम्मल कफ़्फ़ारा बनकर तशरीफ़ लाए। मगर इसके क़ब्ल कि हज़रत ईसा मसीह गुनाहों का यह कफ़्फ़ारा पूरी तौर पर अदा करके खुदा की लामहदूद पाकीज़गी को मुतमईन करते, उन्हें फ़ितरत-ए-आदम इख़्तियार करनी पड़ी थी। और इसी के साथ-साथ यह फ़ितरत जो हज़रत ईसा मसीह ने इख़्तियार की, उसे पूरी तरह उस पहले गुनाह के दाग़ से पाक होना था, क्योंकि हर एक इन्सान जो आदम की नस्ल से आया है, उसकी फ़ितरत में गुनाह बतौर विरासत शामिल होता है। **(बाईबल मुक़द्दस : रोमियो 5: 12-14, पैदाईश (Genesis) 8: 21, ज़बूर (Psalms) 51: 5, 58: 3)** इसका खुलासा इन्शा-अल्लाह हम आगे चलकर करेंगे।

इसीलिए एक निजात दिहन्दे का कुँवारी से पैदा होना लाज़मी था। अगर हज़रत ईसा मसीह खुदा के पाक रूह के ज़रिये ख़ारीकी तौर पर न पैदा हुए होते, तब तो आप को खुद एक निजातदहिंदे की ज़रूरत पड़ जाती गुनाहों से निजात पाने के लिए।

कुरआन शरीफ़ भी फ़रमाता है कि हज़रत ईसा मसीह रूहुल कुदुस से पैदा हुए:

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِن رُّوحِنَا
وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَاتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهِ وَكَانَتْ مِنَ الْقَانِتِينَ

"और इमरान की बेटी मरियम जिस ने अपनी पारसाई की हिफ़ाजत की तो हम ने उसमें अपनी तरफ़ की रूह फूँकी और उस ने अपने रब की बातों और उसकी किताबों की तस्दीक की और फ़रमाँबरदारों में हुई।

(सूरह तहरीम 66: 12 *कंजुल ईमान)*

अब हम अपने मुसलमान दोस्तों के आगे एक सवाल रखते हैं: "क्या अल्लाह को एक बेटा पैदा करने की ग़रज से एक बीवी या कोई साथी की ज़रूरत है? अगर अल्लाह एक बीवी या साथी की मदद से बेटा पैदा करने के क़ाबिल नहीं है। तो जिस ख़ालिक़ ने सारे जहाँन को बिना किसी की मदद के और सिर्फ़ अपने कलाम (ईसा मसीह) की कुव्वत से पैदा किया, तो क्या उसे अपने बेटे (ईसा मसीह- कलामे मुजस्सिम) को पैदा करने के लिए किसी का सहारा चाहिये था?

बीबी मरियम के यहाँ बग़ैर शौहर या किसी मर्द के सहारे एक बेटा पैदा हो गया, तो क्या बीबी मरियम की ज़ात अल्लाह की ज़ात से बढ़कर हुई ?

4 - मसीह का मसलूब होना

मसीहियों का यह बुनियादी अक़ीदा है कि हज़रत ईसा मसीह ने तमाम बनी आदम की ख़ातिर सलीब पर कुरबानी दी, उन गुनाहों और ख़ताओं की क़ीमत चुकाने के लिए जो हम इन्सानों के लिए ख़ुदा पाक की जानिब से, बतौर एक सज़ा बाद मरने के मुक़र्रर की गई है, ताकि हमें उस जहन्नम के आज़ाब से पनाह मिले।

हज़रत ईसा मसीह का यूँ मसलूब होना, वफ़ात पाना और तीसरे दिन मुरदों में से जी उठना मज़हबे ईसवी के ऐतबार से ईमान का बुनियादी अक़ीदा है। किसी भी ईसाई का अक़ीदा या उम्मीद है, उसका दारोमदार हज़रत ई सा का गुनाहगारों की ख़ातिर यूँ वफ़ात पाने पर मुनहसिर है। पुराने अहदनामे का तक़ाज़ा था कि गुनाहों व ख़ताओं की माफ़ी के बदले ख़ून का बहाना यानि ज़िन्दा जानवर की कुरबानी का अदा करना लाज़मी था। और ग़रज ये है कि नए अहदनामे में यह कफ़्फ़ारा हज़रत ईसा की कुरबानी के बदले मुकम्मल तौर पर अदा हो चुका है।

दूसरी तरफ़ इस्लाम हज़रत ईसा के सलीब पर मरने और तीसरे दिन ज़िन्दा किए जाने की सच्चाई को नहीं मानता। मौजूदा ज़माने के मुसलमान आलिमों का नज़रया है कि जिस रात हज़रत ईसा मसीह का क़त्ल करने के मनसूबे बनाए जा रहे थे, उसी रात ख़ुदा ने हज़रत ईसा की शक्ल उनके एक हवारी यहूदा (Judas) पर डाल दी। आगे वह बताते हैं कि उन

सरकश यहूदियों ने ऐसा सोचा कि उन्होंने हज़रत ईसा को सलीब दे दी, जब कि वह सलीब पर मरनेवाला शख़्स यहूदा था ईसा मसीह नहीं।

कुरआन शरीफ़ फ़रमाता है कि ना तो हज़रत ईसा मसीह हलाक हुए थे और ना तो आप मसलूब हूए।

وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللّهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَكِن شُبِّهَ لَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُواْ فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مَا لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلاَّ اتِّبَاعَ الظَّنِّ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا
بَل رَّفَعَهُ اللّهُ إِلَيْهِ وَكَانَ اللّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا

"और उनके इस कहने पर कि हमने मसीह ईसा इब्ने मरियम अल्लाह के रसूल को शहीद किया और है ये कि उन्होने न उसे क़त्ल किया और न उसे सूली दी बल्कि उनके लिये उनकी शबीह का एक बना दिया गया और वो जो उसके बारे में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं जरूर उसकी तरफ़ से शुबह में पड़े हुए हैं उन्हें उसकी कुछ भी ख़बर नहीं मगर यही गुमान की पैरवी और बेशक उन्होंने उसको क़त्ल नहीं किया। बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी तरफ़ उठा लिया और अल्लाह गालिब हिकमत वाला है।" ***(सूरह निसा 4: 157-158*** *कंज़ुल ईमान)*

कुरआन शरीफ़ के इस दावे के बावजूद, ऐसी कोई भी बात उस में पाई नहीं जाती है कि बजाये हज़रत ईसा मसीह के कोई और शख़्स सलीब पर चढ़ाया गया था। यह आयतें बस इतना ही कहती हैं कि खुदा ने लागों को ऐसा मंजर दिखाया कि हज़रत मसीह सलीब पर मारे गये हैं। मगर आज तक इसका जवाब नहीं मिला कि यह वारदत हुई कैसे।

इस गुफ़्तुगू को आगे बढ़ाने के लिये कुरआन शरीफ़ में ऐसी कुछ आयतें हैं जो साफ़ तौर से बताती हैं कि हज़रत ईसा मसीह ने यक़ीनन वफ़ात पाई है। अब हम उन आयतों की तरफ़ रूख़ करते हैं ताकि बड़ी ही बारीक बीनी से उनका मुतॉला कर सकें कि हज़रत मसीह की वफ़ात के ताल्लुक़ से मुसलमान हज़रात का जो इन्कार है, क्या उसका कोई पुख़्ता सुबूत उनकी किताबों में है या नहीं।

अ) सूरह आलि इमरान 3: 144 फ़रमाती है के हज़रत मोहम्मद से पहले सारे रसूल वफ़ात पा चुके हैं। जिनमें हज़रत ईसा भी शामिल हैं।

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلاَّ رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَإِن مَّاتَ أَوْ قُتِلَ انقَلَبْتُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ وَمَن يَنقَلِبْ عَلَىَ عَقِبَيْهِ فَلَن يَضُرَّ اللّهَ شَيْئًا وَسَيَجْزِي اللّهُ الشَّاكِرِينَ

*“मुहम्मद बस एक रसूल हैं। इनसे पहले भी रसूल गुज़र चुके हैं। फिर क्या अगर वह मर जाएं या क़त्ल कर दिए जाएं तो तुम उल्टे पैर फिर जाओगे।” **(सूरह आलि इमरान 3: 144** मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

यह आयत साफ़ तौर से बताती है कि हज़रत मुहम्मद से क़ब्ल जितने भी नबी तशरीफ़ लाए थे, उन सभी ने वफ़ात पाई, जिन में हज़रत ईसा भी शामिल हैं।

'अर-रसूल के असली माने हैं' जितने भी नबी थे, यह जुमला ये दावा करता है कि हज़रत मुहम्मद से पहले भी जितने नबी हुआ करते थे, उन सभी ने वफ़ात पाई है।

सही अल-बुख़ारी जिल्द **2**, किताब **23**, **333**, बताती है कि जब हज़रत मुहम्मद ने वफ़ात पाई तब हज़रत अबू-बकर ने यही आयत पढ़ी थी। तो इस सिलसिले के मुताबिक़ जब हज़रत मुहम्मद की वफ़ात हुई, तब आप के कई चाहनेवालों ने इस बात को मान लेने से इन्कार कर दिया था कि आप की वफ़ात हो चुकी है, और वो सभी कह रहे थे कि आप हयात हैं। इसी वाक़्ये के होते हुए हज़रत अबू बकर ने इस आयत को सब के सामने पढ़ा ताकि लोगों को ख़ामोश कर सकें।

अगर हज़रत ईसा ने वफ़ात न पाई होती, तब तो वह लोग कम से कम इस उम्मीद में रहते कि जब हज़रत ईसा मसीह की वफ़ात नहीं हुई, तब तो यह मुमकिन हो सकता है, कि हज़रत मुहम्मद भी जिंदा सलामत हैं। जब हज़रत अबू बकर ने यह आयत पढ़ी तब तो यह साफ़ था कि जितने भी नबी थे उन सभों की वफ़ात हो चुकी है। अगर इन में हज़रत ईसा का शुमार नहीं होता तब तो इस आयत को कुछ इस तरह पढ़ा जाता, मुहम्मद से पहले जितने भी नबी थे, उन में से एक ईसा इब्ने मरियम को छोड़कर, सभों की वफ़ात हो चुकी है। लेकिन हमें ऐसी कोई भी बात यहाँ नहीं मिलती। इसीलिये **सूरह आलि इमरान 3: 144** के मुताबिक़ इस पर साफ़-साफ़ यक़ीन हो जाता है कि हज़रत ईसा मसीह ने भी वफ़ात पाई है।

ब) हज़रत ईसा खुद ऐसा फरमाते हैं सूरह मरयम 19: 33 के हवाले से कि आप वफ़ात पाएँगे और जी उठेंगे।

وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدتُّ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا

*"और मुझपर सलामती है जिस दिन मै पैदा हुआ और जिस दिन मै मरूंगा और जिस दिन मैं ज़िंदा करके उठाया जाऊंगा।"**(सूरह मरयम 19: 33** मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

जब जब हमारे मुस्लिम भाई, हज़रत ईसा की वफ़ात का इन्कार करते हैं, तब वह इस आयत को उस वाक़्ये से जोड़ते हैं जो आनेवाले दिनों में होगा।गोयाके हज़रत ईसा दुबारा तशरीफ़ लाएँगे और तब वफ़ात पाएँगे और ज़िन्दा किये जाएँगे। इस तरह के माइने निकालना गोया कि खुद मुसलमानों के लिए मसाइल से घिरना है, क्योंकि यही बात हज़रत याहया (यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले) के ताल्लुक़ से कुछ ही आयात पहले अल्लाह तआला फ़रमाता है:

وَسَلَامٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا

*"और सलामती है उसपर जिस दिन वो पैदा हुआ और जिस दिन मरेगा और जिस दिन जिंदा उठाया जाएगा।"**(सूरह मरयम 19:15** कंजुल ईमान)*

कुरआन शरीफ़ की इस आयत के मुताबिक़ इस्लाम ये मानता है कि हज़रत याहया और आप ने वफ़ात पाई और आप जिलाए जाएँगे।मगर मुसलमानों ने हज़रत ईसा मसीह को वफ़ात पाने के क़ब्ल ही जन्नत में पहुँचा दिया, और इस आयत का तवारीख़ी सिलसिला पूरी तरह से तोड़ दिया।

आयात **19:15** और **19:33** के पसेमंज़र में इत्तेहाद यूँ नज़र नहीं आता क्योंकि हज़रत ईसा के साथ होनेवाले दो वाक़्ये यानि मसीह का आसमान पर जिंदा उठा लिया जाना और उनका दुबारा सरज़मीन पर उतर आना शामिल नहीं है। अगर मुस्लिम भाइयों की इन रवायात को मानने के लिए, सूरह **19:33** यूँ होना चाहिये थी "मुबारक़ है वो दिन जब मैं पैदा हुआ, मुबारक़ है वो दिन जब मैं आसमान पर ज़िंदा उठा लिया जाऊँगा, मुबारक़ है वह दिन जब मैं सरज़मीन पर दुबारा उतर आऊँगा, मुबारक़ है वो दिन जब मै मरूँगा और मुबारक़ है वो दिन जब मैं जिलाया जाऊँगा।

सूरह मरयम 19: 33 का जो मुअम्मा है उसका पता हमें जनाब यूसुफ अली की तफ़सीर से मिलता है।

हज़रत मसीह मसलूब नहीं हुए (**सूरह निसा 4: 157**) लेकिन वो लोग जो मानते है कि आप की वफात नहीं हुई है, उन्हें **इन आयात पर ग़ौर करना चाहिए** (Yusuf Ali, The Holy Quran Publishing company - P. 774 f 2485 emphasis ours)

एक मुस्लिम आलिमेदीन ने लिखा है , ''कोई भी मुसलमान हज़रत याहया की वफ़ात को आइन्दा के लिए नहीं टालेगा। सभी यह जानते हैं कि हज़रत याहया ने वफ़ात पाई है - क्योंकि अब कोई भी शख़्स हज़रत याहया की वफ़ात को आइन्दा के लिए नहीं टाल सकता, इसीलिये कोई भी शख़्स हज़रत ईसा की वफ़ात को भी आइन्दा के लिऐ नहीं टाल सकता। दर हक़ीक़त क़ुरआन शरीफ़ में ऐसा जिक़र कहीं पर भी नहीं किया गया है

कि हज़रत मसीह वफ़ात पाने के वास्ते दुबारा इस दुनिया में तशरीफ़ लाने वाले हैं।यह मुत्वाज़ी बयान, कि हज़रत याहया की वफ़ात हो चुकी है, साफ़ तौर से यह खुलासा कर देता है कि हज़रत ईसा की यक़ीनन वफ़ात हो चुकी है।''

(A.H. Obaray, *Miraculous Conception, Death, Resurrection, and Ascension of Jesus* (*Nabi-Isa*) *as Taught in the Kuran* [Kimberley, South Africa; Pub. By Author, 1962], p. 45)

وَجَعَلَنِي مُبَارَكًا أَيْنَ مَا كُنتُ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ حَيًّا

"और उसने मुझे मुबारक किया मैं कहीं हूँ और मुझे नमाज़ व ज़कात की ताकीद फ़रमाई जब तक जिऊँ।" ***(सूरह मरयम 19: 31** कंजुल ईमान**)***

तो सूरह मरयम 19: 31 से ली गई यह आयत उससे भी ज़्यादा ग़ौर फ़रमाने के लायक़ है।

इस आयत के हवाले से हज़रत ईसा मसीह को हुक्म दिया गया है कि मरते दम तक आप नमाज़ पढ़ें और ज़कात अदा करते रहें।तो अब सवाल यह खड़ा होता है अगर हज़रत ईसा की वफ़ात अब तक नहीं हुई है तो क्या वह आज भी जन्नत में ज़कात और नमाज़ अदा कर रहे हैं?आज जब हज़रत मसीह जन्नत में ज़िंदा सलामत हैं तो आप अपनी ज़कात वहाँ किसे दिया करते हैं?

स) आयतें जो हज़रत मसीह की वफ़ात का ज़िकर करती हैं।

إِذْ قَالَ اللّهُ يَا عِيسَى إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُواْ وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُواْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ

*"जबकि अल्लाह ताआला ने फ़रमाया: ऐ ईसा (कुछ ग़म न करो) बेशक मैं तुमको **वफ़ात (इन्नी मुत्तवफ्फीका)** (إِنِّي مُتَوَفِّيكَ) देने वाला हूँ और मैं तुमको अपनी तरफ़ उठाए लेता हूँ और तुमको उन लोगों से पाक करने वाला हूँ।" **(सूरह आलि इमरान 3: 55** मौलाना अशरफ़ अली थानवी)*

مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلاَّ مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُواْ اللّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ

"मैंने तो उनसे और कुछ नहीं कहा मगर सिर्फ़ वही जो आपने मुझसे कहने को फ़रमाया था कि तुम अल्लाह की बन्दगी (इख्तियार) करो, जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, फिर जब आपने मुझको उठा लिया (तवफ्फ़यतनी) (تَوَفَّيْتَنِي) तो आप उन पर मुत्तला रहे, और आप हर चीज़ की पूरी ख़बर रखते हैं। ***(सूरह माइदा 5: 117 मौलाना अशरफ़ अली थानवी)***

यह जो अलफ़ाज़ हैं "मै तुझे उठा लूँगा" और "जब आपने मुझे उठा लिया" वो लिये गए हैं अरबी के लफ़्ज़ **'तवफ्फा'** से। यह लफ़्ज़ कुरआन शरीफ़ में तक़रीबन हर बार उन के बारे में इस्तेमाल होते हैं जिन्हें मौत के वक़्त उठा लिया गया है। जनाब यूसुफ़ अली ने जो अरबी से अंग्रेजी में

कुरआन शरीफ़ का पहली बार तर्जुमा किया था, उस में आप ने इन लफ़्जों का यह सीधा सीधा तर्जुमा किया था **"मै तुझ को मौत दूँगा"** मगर आपने दूसरी बार जब तर्जुमा किया तो इसे बदलकर यूँ लिखा है, **"मै तुझ को उठा लूँगा।"**

अब इसी रोशनी में आप ज़रा नामवर आलिमे दीन, तफ़सीर कार और मुतर्जिम जनाब मौलाना वहीदउद्दीन ख़ान के **सूरह 3: 55** और **सूरह 5: 117** का अंग्रेज़ी में किये हुए तर्जुमें पर ग़ौर फ़रमाइये।

वह यूँ है, *"अल्लाह ने फ़रमाया" ऐ ईसा, मैं तुझे मौत दूँगा और तुझे अपनी तरफ़ उठा लूँगा, और तुझे सारे मुनकिरों से अलग करूँगा।* ***(सूरह आलि इमरान 3: 55*** *मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

और "मैने बस उन्हें वही बताया जिसे बताने का हुक्म तूने मुझ को दिया है, अल्लाह की इबादत करो, जो मेरा रब और तुम्हारा रब है, मै उनके बीच उनकी हरकतों का गवाह बना रहा जब तक मैं उनके बीच रहा, और जब तूने मुझे मौत दी, तू उन को देख रहा था तू सारी चीजों का गवाह है" ***(सूरह माइदा 5: 117*** *मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

'तवफ़्फ़ा' के माने तक़रीबन हर बार मौत से ही होते हैं। जब या तो खुद खुदा या फिर जब उसके फ़रिश्ते का ज़िकर आता है, जैसा हम अगली आयतों में देखने वाले हैं।

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَاللّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ

*"और जो लोग तुममें **वफ़ात** (يُتَوَفَّوْنَ) पा जाते हैं और बीवियाँ छोड़ जाते हैं। **(सूरह बक़रा 2: 234** मौलाना अशरफ़ अली थानवी)*

وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّهُ شَهِيدٌ عَلَى مَا يَفْعَلُونَ

*"और जिस **(अज़ाब)** का उनसे हम वायदा कर रहे हैं, उसमें से कुछ थोड़ा-सा **(अज़ाब)** अगर हम आपको दिखला दें, या (उसके नाज़िल होने से पहले ही) हम आपको **वफ़ात** (**نَتَوَفَّيَنَّكَ**) दे दें।" **(सूरह यूनुस 10: 46** मौलाना अशरफ़ अली थानवी)*

الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلائِكَةُ ظَالِمِي أَنفُسِهِمْ فَأَلْقَوُاْ السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِن سُوءٍ بَلَى إِنَّ اللّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ

*"**जिनकी जान** फ़रिश्तों ने कुफ्र की हालत में निकाली थी (تَتَوَفَّا), फिर वे (काफिर) लोग सुलह का (पैग़ाम) डालेंगे कि हम तो कोई बुरा काम न करते थे।" **(सूरह नहल 16: 28** मौलाना अशरफ़ अली थानवी)*

قُلْ يَتَوَفَّاكُم مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَى رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ

*"तुम फ़रमाओ तुम्हे **वफ़ात** (يَتَوَفَّا) देता है **मौत** का फ़रिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर है ।अपने रब की तरफ़ वापस जाओगे।"*

***(सूरह सज्द 32: 11** कंज़ुल ईमान)*

इन दी गई मिसालों और जुबान की बोल चाल के सुबूतों से, हम इसी नतीजे पर पहुँचते हैं, कि **सूरह आले-इमरान 3: 55** और **सूरह माइदा 5: 117**, यह साबित कर देते हैं कि जन्नत में दाख़िल होने से क़ब्ल हज़रत ईसा ने बिला शुबह वफ़ात पाई है।

ड) इस के इलावा और भी सुबूत मिलते हैं सही बुख़ारी की हदीस में।

इब्ने मसूद के हवाले से, मेरे सामने तब वह मनज़र आ गया, जब रसूलअल्लाह ने उस नबी का जिक़र किया, जिनको आप की उम्मत वालों ने बे-रेहमी से तकलीफ़ पहुँचाई और आप को लहू लुहान कर डाला था, और उस वक़्त आप ने अपने चेहरे पर से ख़ून पोछते हुए दुआ की थी, **"ऐ अल्लाह, मेरी उम्मत को बख्श दे, वो नहीं जानते कि वो क्या कर रहे हैं।" (बुख़ारी शरीफ , किताब 4: 683)(डॉ. मुहम्मद मोहसिन ख़ान- 9 किताबों का तर्जुमा) -**

तो जब हम ऐसे नबी की शिनाख़्त करते हैं तो यही बात सामने आती है कि वह तो वाहिद हमारे अज़ीज़ और मुबारक सैय्यदना हज़रत ईसा मसीह ही थे जिन्हें कोड़ो से मारा गया था और यह दुआ आप ही ने मरते वक़्त सलीब पर की थी।

“जब वह उस जगह पर पहुंचे जिसे खोपड़ी कहते हैं तो वहां हज़रत ईसा मसीह को मसलूब किया और बदकारों को भी, एक को दाहिनी और दूसरे

को बाईं तरफ़। हज़रत ईसा मसीह ने फ़रमाया "ऐ बाप! (ऐ रब्ब) इनको मुआफ़ कर क्योंकि यह नहीं जानते कि क्या करते हैं"... **(लूका की इन्जील 23:32-34)**

ई) तो फिर सूरह निसा 4: 156-157 की तशरीह क्या है?

लेकिन अब भी इस मामले का हल नहीं निकलता है, क्योंकि सूरह **4: 157** इस बात से इन्कार कर देती है कि हज़रत ईसा सलीब पर चढ़ाए गये थे। अब ऐसे कई मुमकिन हल नज़र आते हैं जब हम उस बात का खुलासा करने की कोशिश करते हैं, जो वैसे तो तज़ाद मालूम पड़ता है। एक तरफ़ कुरआन शरीफ़ कुछ इस तरह फ़रमाता है कि हज़रत ईसा मसीह को सलीब दी गई और उन्होंने **वफ़ात** भी पाई और फिर दूसरी तरफ़ वह साफ़-साफ़ मुकर जाता है कि यहूदियों ने मसीह को ना तो सलीब दी और ना तो हलाक किया। तो फिर **सूरह 4: 156-157** के माने क्या निकाले जाएँ?

कुछ साल पहले जनाब ई.ई. एल्डर ने इसी पर लिखे अपने एक मज़मून में बड़ी बारीक बीनी से फ़रमाया है, "यह आयात ऐसा तो नही बताती हैं कि हज़रत ईसा ने वफ़ात नहीं पाई, या कि आप सलीब पर नही गये। यह तो सिर्फ़ इतना ही कहती है कि उन लोगों **(यहूदियों)** ने अपने हाथों से ना तो आप को हलाक किया ना सलीब दी। और देखा जाए तो तवारीख़ के हवाले से यह बिल्कुल सच है, हालांकि ऐसा करना तो यहूदियों की ज़िम्मेदारी थी, मगर दर हक़ीक़त वो रोमी सिपाही थे जिन्होने इस काम को अन्जाम दिया था। मगर एक ख़्याल यह भी है जिससे ऐसा ज़ाहिर होता है

कि वो ना तो यहूदी थे और ना रोमी सिपाही जिन्होंने हज़रत ईसा को सलीब दी थी। उस वक़्त जब रोमी गवरनर पिलातुस ने अपना फ़ैसला सुनाया था, तब हज़रत ईसा ने उसके जवाब में यूँ फ़रमाया था - *"अगर तुझे ऊपर से ना दिया होता, तो तेरा मुझ पर इख़्तियार न होता"* **(यूहन्ना 19: 11)** तब यहूदी यह समझे थे कि उन्होंने आप को शहीद किया, हालांकि, "उन्होंने क़तई ऐसा नहीं किया" दर हक़ीक़त कोई भी इन्सान मसीह को मारने में कामयाब नहीं हुआ, बस वाहिद ख़ुदा ने ऐसा कर दिखाया, अपने एक पोशीदा मक़सद को पूरा करने की ग़रज़ से। **सूरह अन्फ़ाल 8: 17** में इसकी तशरीह के मुतावाज़ी लिखा है, कि जिस वक़्त मुसलमान जंगे बदर की फ़तेह का जश्न मना रहे थे और उस जीत का सेहरा अपने ही नाम लिख रहे थे, तब उन्हें बड़ी सख़्ती से कहा गया कि इन्सान अपने बल पर कुछ भी नहीं कर सकता, जो एक ऐसी दीनी तालीम थी, जिसने इस्लाम में एक गहरी जड़ पकड़ली है। (कुरआन में ईसा, मुसन्निफ जेफरी पेरिन्डर वन वर्ल्ड **1995**)

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَكِنَّ اللّهَ قَتَلَهُمْ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَكِنَّ اللّهَ رَمَى
وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلاء حَسَناً إِنَّ اللّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

"पस उन्हें तुमने क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने क़त्ल किया। और जब तुमने उन पर ख़ाक फेंकी तो तुमने नहीं फेंकी बल्कि अल्लाह ने फेंकी ताकि अल्लाह अपनी तरफ़ से ईमान वालों पर खूब एहसान करे ।"
*(**सूरह अन्फ़ाल 8: 17** मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

यहूदी इस वजह से हज़रत ईसा का क़त्ल करना चाहते थे क्योंकि बहुत सारे लोग आप के शागिर्द बन चुके थे। और आप की पैरवी करते थे। यहूदी ये देखकर घबरा गए थे अगर उन्होंने आम लोगों को हज़रत ईसा की पैरवी में चलने दिया तब तो बुहत जल्द हर एक शख़्स हज़रत मसीह के पीछे हो लेगा।और यहूदी मज़हब के उन हुक्मरानों के इशारों पर चलनेवाला कोई नहीं बचेगा।इस के सबब उनका रूतबा और इख़्तियार ख़त्म हो जाने के डर से वह हज़रत ईसा मसीह को अपने रास्ते से हटाना चाहते थे। उधर रोमियों के हाकिमों ने हज़रत ईसा मसीह को इस वास्ते भी मसलूब किया क्योंकि उनको लगा कि यहूदी हुक्मरानों की यह माँग पूरी कर देने से, हर एक यहूदी उनकी हुकूमत में खुश रहेगा। मगर हक़ीक़त में वो ना तो यहूदी थे और ना तो वो रोमी थे जिन्होंने हज़रत ईसा मसीह की जान ली, बस वह तो ख़ुदा पाक था जिसने हम इन्सानों के तमाम गुनाहों को हज़रत ईसा पर लाद दिया था, और हज़रत ईसा ने सारे आलम के गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा किया। और आप के पाक ख़ून का एक-एक क़तरा हमारे गुनाहों का फ़िदिया बनकर बहा। हज़रत ईसा मसीह शरियत को और अपनी कुरबानी की नबूव्वत को पूरा करने के लिए इस दुनिया में तशरीफ़ लाए थे।

फ) एक के बदले दूसरे को सलीब देना खुदा पाक को एक फरेबी बना देता है :

ऐसा ख़्याल के हज़रत ईसा मसीह के बजाए कोई और शख़्स सलीब पर मारा गया है, क़तई माकूल नहीं है। अगर ऐसा कुछ हुआ होता तब तो खुदा की पाक ज़ात पर फ़रेब का इल्ज़ाम लग जाता है। मान लीजिये अगर हज़रत ईसा मसीह को खुदा ने सलीब पर जाने के क़ब्ल ही ज़िन्दा उठा लिया होता और किसी दूसरे का चेहरा आप का सा बना दिया होता, तब तो सलीब का मंज़र देखने वाले हर तरह से मान लेते कि शहीद होने वाला शख़्स हज़रत ईसा मसीह ही हैं, जब कि खुदा ने तो आप को सलीब की मार से बचाकर ज़िन्दा उठा लिया था। अब वह मंज़र सारे दुश्मन यहूदी, रोमी सिपाही, हज़रत ईसा मसीह के हवारी और बेशुमार लोगों ने अपनी आंखों से देखा था कि मसलूब होने वाला शख़्स हज़रत ईसा मसीह ही थे। ऐसा हो जाने के बाद आप के हवारियों ने तमाम दुनियाँ में जाकर पैग़ामें सलीब की मनादी की। और इन हवारियों के इलावा कितने ही ऐसे मसीह के चाहनेवाले आगे चलकर पैदा हुए जिन्होंने इन्जील की मनादी की और बग़ैर उफ़ किये इसे सच्चाई मानकर, कुरबान हो गये - बस यही एक पैग़ाम देने की ग़रज़ से, कि हज़रत ईसा मसीह दुनिया में तशरिफ़ लाये और सलीब पर कुरबान हुए ताकि दुनियाँ भर के गुनेहगारों को गुनाहों से निजात दिलाएँ।

इसके नतीजे में हज़रत ईसा मसीह की इन्जील दुनिया भर में पहुँच पाई, और करोड़ों इन्सानों ने उस मसीहा को अपना निजात दिहन्दा कुबूल किया जो उनकी ख़ातिर सलीब पर बेरेहमी से मारा गया था। अब इन बातों की रोशनी में हमारा सवाल यह है, अगर सलीब पर मरनेवाली वह हस्ती हज़रत ईसा मसीह नहीं थे, **तब ईसा मसीह के माननेवालों को गुमराह किसने किया?** यह बदले जाने का नज़रिया (हज़रत ईसा मसीह के बजाए कोई और मरा) मज़हबी तवारीख़ में ख़ुदा के हाथों खेला गया सब से फ़रेबी खेल लगेगा।

हैरत की बात यह है कि यह नज़रिया जो शायद तवारीख़ का सब से बड़ा ग़लबा माना जाता है, उसने करोड़ों मुसलमानों को कुफ्र की ज़ंजीरों में बाँधे रखा है।

ग) बदल दिये जाने का यह नज़रिया, उन तमाम चश्मदीद गवाहों और तवारीख़ी सुबूतों के बरख़िलाफ़ है:

अगर आज कोई ऐसा कहता है "गांधीजी को ना तो गोली मारी गई थी और ना तो उनकी मौत वाक़्ये हुई थी, पर वह यूँ ही ग़ायब हो गये थे और उनके बदले कोई और ही मारा गया था।" तब इसके जवाब में आज की नस्ल क्या कहेगी? क्या कोई भी अैसा कहने वाले शख़्स से राज़ी होगा? लोग अैसे शख़्स की बात इसलिए नहीं मानेंगे, क्योंकि ना तो वह इस वारदात का चश्मदीद गवाह था, ना तो उसे यह मालूमात किसी चश्मदीद गवाह या गवाहों से मिली, और आख़िरकार उसकी बात उन चश्मदीद

गवाहों की गवाही से बिल्कुल भी नहीं मिलती जिनके सामने गांधीजी को गोली मारकर शहीद किया गया था।

यह बदले जाने के मामले की बात बिल्कुल माकूल नहीं है, और **इसकी पहली वजह है** कि यह नज़रिया मसीह की शहादत के चश्मदीद गवाहों के बयानों से तज़ाद रखता है, जहाँ वो सारे के सारे एक बुलन्द आवाज में कहते है 'ईसा नासरी' मसलूब हुए थे। **(बाईबल मुकद्दस: मत्ती 27, मरकुस 14, लूका 23, यूहन्ना 19)**

दूसरी वजह, यह बदले जाने की कहानी शुरूआत में लिखी हुई इन्जील से बिल्कुल अलग थलग है। इसके इलावा यह कहानी यहूदियों, रोमियों और सामरियों की गवाही जो मसीह के मसलूब होने पर है, उन से भी इख़्तिलाफ रखती है। हालांकि इनके इलावा और भी बहुत सारी ख़बरें पाई जाती हैं जो मसीह के मसलूब होने की तसदीक़ करती हैं, और जिन में से कुछ ख़बरें मुअत्बर तवारीख़ी हवालों से मिली हैं।

आइये उनमें से कुछ तवारीख़ी सुबूतों पर नज़र डालें

1) जोसेफ़स, पहली सदी इसवी का एक यहूदी तवारीख़ लिखनेवाला (37-100 ईसवी) यूँ लिखता है, ''ईसा नाम का एक दानिशमंद इन्सान था - पिलातुस ने उसे सलीब पर मौत की सज़ा सुनाई।''

2) कुरनेलियस टेसिटस नाम का एक रोमियों तवारीख़ लिखनेवाला

(55- 117 ईसवी) जिसने 'एनेलस' लिखी है, जिसे तवारीख़ की ऐसी किताब माना जाता है जिस में क़ैसर अगस्तुस के बाद के चार रोमी क़ैसरों के दौर की तवारीख़ें दर्ज हैं। इस किताब में पाया जाता है किस तरह पॉन्तिस पिलातुस ने हज़रत ईसा मसीह को सज़ाए मौत सुनाई थी, जब टाई बीरियस (तिबरियास) की हुकूमत रवाँ थी।

3) नए अहदनामें के इलावा थालुस (52 ईसवी का) जो एक फ़िलिस्तीनी मुअररिख था, उसने भी मसीह का ज़िकर किया है। उसने लिखा है जब मसीहा को सलीब पर चढ़ाया गया था तब सरज़मीन पर एक अंधेरा सा छा गया था।

4) मारा बार सेराफिओन (73 ईसवी) ने अपने बेटे को उस दौर में एक ख़त लिखा था जो बर्तानिया के अजायब घर में आज भी मेहफूज़ है, जिस में एक सवाल किया गया है, "यहूदियों को अपने ही बादशाह को सलीब देकर क्या हासिल हुआ? बस ऐसा करने के कुछ ही अर्से बाद उनकी अपनी बादशाहत भी ख़त्म हो गई।"

5) दूसरी सदी ईसवी में जसटिन मारटर नें ''पॉन्तिस पिलातुस के कारनामे'' इस मौज़ू पर लिखी अपनी किताब में यह जिकर छेड़ा है ''कि जिसकी हुकूमत में सलीब पर चढ़ाते हुए ईसा के हाथों और पैरों में कीलें मारी गई थीं, आप के कपड़ों को सलीब देनेवालों ने आपस में तक़सीम कर लिया था।"

6) यहूदियों की किताब टालमुड भी हज़रत ईसा मसीह को सज़ाऐ मौत देने की बात का बयान करती है, कुछ इस तरह से, ''फसह की शाम येशुआ (ईसा) को सलीब पर चढ़ाया गया था।'' इस के बावजूद कि यह सारी लिखी गवाहियाँ दरअसल उनकी हैं जिनको मज़हबे ईसवी से कोई उनसियत नहीं थी, बल्कि वो सब इस मज़हब के मुख़ालिफ़ थे, उन्होंने यह पुख़्ता और यकसाँ तसदीक़ की है कि पॉन्तिस पिलातुस की हुकूमत में ईसा नासरी को मसलूब किया गया है।

तीसरी अहम बात। पहली सदी ईसवी से हमें एक भी अैसी गवाही या सुबूत नहीं मिलता है दीने ईसवी के दोस्त या दुश्मन की तरफ़ से, जो इन बातों के बरख़िलाफ़ है।

यह जो अफ़वाह है कि हज़रत ईसा मसीह के बदले कोई और मारा गया, इसकी पैदाइश पहली सदी ईसवी में नहीं हुई थी, और ना तो किसी चश्मदीद गवाह के छोड़े हुए दस्तावेज़ों के सुबूतों की बुनियाद का नतीजा है, और ना ही उस दौर के वाक़्यात की बिना पर।

हमारे अज़ीज़ भाईयों, सच्चाई का ताल्लुक़ हक़ीक़त से होना चाहिए। हर एक दावे को सच्ची गवाहियों पर क़ायम होना चाहिए। हज़रत ईसा मसीह की **वफ़ात** को साबित करने की ग़रज़ से हम ने ये तमाम सुबूत आप की ख़िदमत में पेश किये हैं।

हम चाहते हैं आप बड़े ग़ौर और इतमिनान से इन सुबूतों पर अपनी तवज्जो फ़रमायें और खुद से यह समझे, क्या मसीह का मसलूब होना क़ाबिले यक़ीन सुबूत है या नहीं। या फिर यूँ ही कह दें बग़ैर किसी पुख़्ता बुनियाद या सुबूतों के, कि हज़रत ईसा मसीह को खुदा ने ज़िन्दा उठा लिया और उनकी जगह किसी और शक़्स को मरने के लिये यहूदियों के हाथों में छोड़ दिया।

5 - हज़रत ईसा मसीह का मसलूब होना क्यों ज़रूरी था? गुनाहों की माफ़ी और नजात।

यह हर बशर की तमन्ना व कोशिश रहती है कि मरने के बाद वह जन्नत में एक अबदी ज़िन्दगी बिताए। मगर खुदा को मानने वाले लोग ये जानते हैं कि उनमें कोई अैसी खूबी नहीं जो उन्हें जन्नत में दाख़िल होने के क़ाबिल बना पाए, क्योंकि हर इन्सान किसी न किसी तरह से गुनहगार है।और साथ ही साथ उस में खुदा के सामने आने का ख़ौफ है।हज़रत ईसा मसीह बनी आदम के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बनकर सलीब पर शहीद हुए ताकि खुदा और बंदे के दरमियान खड़ी गुनाहों की दीवार को हटा दें। और चूंकी खुदा जो सच्चा मुनसिफ़ और आदिल बादशाह है, वह अपने बंदों के गुनाहों को यूँ ही नज़र अंदाज नहीं कर सकता, क्योंकि गुनाह क़ाबिले सज़ा है। तो जिस सज़ा के मुसतहक़ हम थे, उस सज़ा को हज़रत ईसा मसीह ने सलीब पर जाकर अपनी कुरबानी के ज़रिए माफ़ करवा दिया, और खुदा से हमारी सुलह करवाई ताकि हम खुदा के साथ एक अटूट रिश्ते में बंध जाएँ और अबदी ज़िन्दगी के हक़दार बनें।

अब ज़रा देखते हैं कि बाइबल मुक़द्दस और कुरआन शरीफ़ गुनाह के बारे में क्या क्या फ़रमाता है।

अ) गुनाह आलमगीर है:

बाइबल मुक़द्दस इस पर यूँ फ़रमाती है

"चुनांचे लिखा है कि कोई रास्तबाज़ नहीं। एक भी नहीं। कोई समझदार नहीं कोई खुदा का तालिब नहीं। सब गुमराह हैं सब के सब निकम्में बन गये। इसलिए कि सब ने गुनाह किया और खुदा के जलाल से महरूम है।" ***(रोमियों 3: 10-12, 23)***

कुरआन शरीफ़ भी फ़रमाता है कि हर एक इन्सान गुनेहगार है।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِم مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِن دَآبَّةٍ وَلَكِن يُؤَخِّرُهُمْ إلَى أجَلٍ مُّسَمًّى فَإِذَا جَاء أجَلُهُمْ لاَ يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلاَ يَسْتَقْدِمُونَ

"और अगर अल्लाह लोगों को उनके ज़ुल्म पर पकड़ता तो ज़मीन पर किसी जानदार को न छोड़ता। लेकिन वह एक मुक़र्रर वक़्त तक लोगों को मोहलत देता है।" ***(सूरह नहल 16: 61*** *मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤَاخِذُهُم بِمَا كَسَبُوا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ بَل لَّهُم مَّوْعِدٌ لَّن يَجِدُوا مِن دُونِهِ مَوْئِلًا

"और आपका रब बड़ा मग़फिरत करने वाला रहमत वाला है। अगर उनसे उनके आमाल पर पकड़ करने लगता तो उन पर फ़ौरन ही अज़ाब ला देता, बल्कि उनके वास्ते एक तय वक़्त है, कि उससे इस तरफ़ कोई पनाह की जगह नहीं पा सकते।" ***(सूरह कह्फ़ 18: 58*** *मौलाना अशरफ़ अली थानवी)*

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَى ظَهْرِهَا مِن دَابَّةٍ وَلَكِن يُؤَخِّرُهُمْ إِلَى أَجَلٍ مُّسَمًّى فَإِذَا جَاء أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا

'' और अगर अल्लाह लोगों के आमाल पर उन्हें पकड़ता तो ज़मीन पर वह एक जानदार को भी न छोड़ता। लेकिन वह उन्हें एक मुक़र्रर मुद्दत वक़्त तक मोहलत देता है। '' ***(सूरह फ़ातिर 35: 45** मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

बाइबल मुक़द्दस और कुरान शरीफ़ की इन आयात के मुताबिक़ हर इन्सान गुनहगार ठहरता है और जिसका ताल्लुक़ हर किसी की ज़िन्दगी की एक हक़ीक़त है। अब सवाल उठता है , ''हम ख़ुदा के ख़िलाफ़ क्यों हो गये? और हम हमेशा वही काम क्यों करते हैं जिससे ख़ुदा ख़ुश नहीं होता? हमारे अंदर वह क्या है जो हमें ख़ुदा के बरख़िलाफ़ चलाता है?''

इन तमाम सवालात के जवाब हमें उस पहले मसले की जानिब लिए चलते है, यानि कि हम फितरती तौर पर गुनेहगार हैं , हम गुनाह यूँ करते हैं कि हम फ़ितरतन गुनेहगार हैं। तो अब सवाल यह है हमारे अंदर यह फ़ितरत आख़िर आई कहाँ से?

बाईबल मुक़द्दस फ़रमाती है: ''पर जिस तरह एक आदमी के सबब से गुनाह दुनिया में आया और गुनाह के सबब से मौत आई और यूँ मौत सब आदमियों में फैल गई इसलिए कि सब ने गुनाह किया। तौभी आदम से लेकर मूसा तक मौत ने उन पर भी बादशाही की जिन्हों ने उस आदम की सी नाफ़रमानी वाला गुनाह किया था। ये आदम एक आने वाले की शबिया पर था।'' **(रोमियों 5 : 12, 14)**

तो हज़रत आदम के गुनाह करने का वह तबाहकुन नतीजा जिससे गुनाह करने की फ़ितरत हमारी विरासत में शामिल हो गई है, जिसके रहते आदम की तमाम औलाद गुनेहगार बन चुकी है। और अब जो हर एक इन्सान गुनेहगार क़रार दिया गया है तो लाज़िम है कि वह ख़ुदा पाक के इन्साफ़ का मोहताज बन चुका है।

बाईबल मुक़द्दस यह भी फरमाती है।"क्योंकि ख़ुदा ने दुनिया से ऐसी मुहब्बत की कि उसने अपना इकलौता बेटा बख़्श दिया ताकि जो कोई उस पर ईमान लाए हलाक ना हो बल्कि हमेशा की ज़िन्दगी पाए। क्योंकि ख़ुदा ने बेटे को दुनिया में इसलिए नहीं भेजा कि दुनिया पर सज़ा का हुक्म करे बल्कि इसलिए दुनिया उसके वसीले से निजात पाए।" **(यूहन्ना की इन्जील 3: 16,17)**

"क्योंकि गुनाह की मज़दूरी मौत है मगर ख़ुदा की बख्शिश हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह में हमेशा की ज़िन्दगी है।" **(रोमियों 6: 23)**

ब) इस्लाम में वो पहला गुनाह:

बाइबल मुक़द्दस की पहली किताब पैदाईश के तीसरे बाब में है कि जब हज़रत आदम और बीबी हव्वा से गुनाह सर्ज़द हुआ, तब उन्हीं के ज़रिये गुनाह की फ़ितरत इन्सानों में आ गई।और तमाम नसलें गुनेहगार बन गई मगर इस बात पर हमारे मुस्लिम भाई ऐतराज़ करते हैं और मानते हैं कि कोई एक शख़्स दूसरे शख़्स के गुनाह की बदौलत सज़ा नहीं उठा सकता है, क्योंकि उनका मानना है कि हर एक को अपने किए की सज़ा उठानी

पड़ेगी। वह कहते हैं, "क्योंकि हम दूसरे का गुनाह नही ढोते तब तो हम हज़रत आदम के किये गुनाह के हिस्सेदार नहीं हैं, और इसलिए हम गुनाह करने की फ़ितरत लेकर पैदा नहीं होते।"

इसी पसेमंज़र को ज़ेहेन में रखते हुए अब हम अपनी तवज्जो इस्लाम की तालीमात पर डालेंगे यह समझने के लिए कि कुरआन शरीफ और हदीसें उस पहले गुनाह का इन्कार करती हैं या ऐसा बताती हैं कि इन्सान बेऐब पैदा होता है।

कुरआन का उस पहले गुनाह पर क्या कहना है?

तो हम यह सिलसिला कुरआन शरीफ़ की इन आयात से जारी करेंगे।

فَأَزَلَّهُمَا الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ وَقُلْنَا اهْبِطُواْ بَعْضُكُمْ
لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَى حِينٍ
قُلْنَا اهْبِطُواْ مِنْهَا جَمِيعاً فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدًى فَمَن تَبِعَ هُدَايَ فَلاَ
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلاَ هُمْ يَحْزَنُونَ

*"फिर शैतान ने उस दरख़्त के ज़रिए दोनों को लग़ज़िश (ग़लती) में मुब्तिला कर दिया और उन्हें उस ऐश से निकलवा दिया जिसमें वे थे। और हमने कहा <u>तुम सब उतरो यहां से</u>। <u>तुम एक दूसरे के दुश्मन होगे</u>। और तुम्हारे लिए ज़मीन में ठहरना और काम चलाना है एक मुद्दत तक।"**(सूरह बक़रा 2 : 36-38** मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

ये आयतें ज़ाहिर कर देती हैं कि हज़रत आदम के गुनाह का आइन्दा आनेवाली उनकी नसलों पर मनफ़ी असर पड़ा। क्योंकि अर्बी जुबान में जो `तुम` **सूरह 2 : 36** और **2 : 38** में इस्तेमाल हुआ है, वह जमा (एक से ज़्यादा है) जो सिर्फ दो ही नहीं है। हम जानते हैं कि **सूरह 2: 38** में इसका मतलब शैतान से नहीं है, क्योंकि वह तो धोकेबाज़ है और जहन्नुम जाएगा और अल्लाह की दी गई हिदायत पर कभी भी नहीं चलेगा। तब तो यह साफ़ तौर पर ज़ाहिर हो जाता है कि 'जमा' का मतलब अब तमाम आदम ज़ात से है। हज़रत आदम की ख़ातिर तमाम आदम ज़ात को ख़तावार ठहराकर जन्नत से महरूम रखा गया।

قَالَ اهْبِطُواْ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَى حِينٍ

''ख़ुदा ने कहा, उतरो, तुम <u>एक दूसरे के दुश्मन होगे</u>, और तुम्हारे लिए ज़मीन में एक ख़ास मुद्दत तक ठहरना और नफ़ा उठाना है।'' ***(सूरह आराफ़ 7: 24** मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

तो आयात (**सूरह बक़रा 2: 38-39**) को मश्हूर सफ़ीर जनाब इब्ने क़ासिर ने यूँ बयान किया है।

''अल्लाह ने हज़रत आदम और उनकी बीवी हव्वा,और इबलीस हज़रत आदम की तमाम औलाद को आगाह किया जब उसने उन्हें जन्नत से नीचे ज़मीन पर उतारा था और तब अल्लाह ने फ़रमाया था कि वह पैग़म्बरों के ज़रिये अपना कलाम, अपनी निशानियाँ और सुबूत भेजेगा।

(तफ़सीर इब्ने क़ासिर, part 1; सूरा अल -फातिहा, सूरा अल बक़र, आयात 1 - 141, शेख़ नसीब अर - रफ़ाई [अल - फ़िरदौस लिमिटेड, लंडन, दूसरी शाया जिल्द 1998] पी पी 109 - 110)

मरहूम अब्दुल्लाह यूसुफ़ अली ने **सूरह बक़रा 2: 36** के बारे में कुछ ऐसी ही बात लिखी है।

ज़रा ग़ौर फ़रमाइयेगा उस पर जो अर्बी जुबान में सूरह 2: 33 में 'वाहिद' की शक्ल में है, और अब यही सूरह 2: 35 में 'जमा दोहरे' की शक्ल इख़्तियार कर लेता है, और इसके बाद सूरह 2: 36 में यही 'जमा' की शक्ल ले लेता है। और इसी का इशारा हम अंग्रेजी के तर्जुमें **'आल ई पीपल'** (तुम सब के सारे इन्सान) में ज़ाहिर करते हैं। **अब ज़ाहिर है कि हज़रत आदम बनी आदम के नुमाइनदे हैं, और जिस में दोनों ही जिन्स तमाम रूहानी मामलात में एक दूसरे में शामिल हैं।**

इसके इलावा हज़रत आदम, बीबी हव्वा और इबलीस को जन्नत से बेदख़ल करने के बारे में यह बात कही गई है, और अर्बी में जमा दो से ज़्यादा तादाद के लिए मुनहसिर होता है।

उस पहले गुनाह पर हदीस क्या फ़रमाती है?

अबू हुरैरा के हवाले से रसूलउल्लाह ने फ़रमाया है, " आदम और मूसा में बहस छिड़ गई मूसा ने आदम से फ़रमाया **"ऐ आदम " आप वह बाप है जिसने हमें नाउम्मीद किया और जन्नत से बेदखल करवा दिया "**। तब आदम ने मूसा को जवाब दिया, "ऐ मूसा! अल्लाह ने तुम से हम कलाम होकर तुम पर महेरबानी की है, और तुम्हारे लिए अपने हाथ से तौरेत शरीफ़ लिखी। **क्या तुम मुझे उस हरकत का ख़तावर ठहरा रहे हो, जिसे करना मेरे मुक़द्दर में, मेरी पैदाईश से चालीस साल क़ब्ल ही, खुदा ने लिख दिया था?"** तो इस तरह से आदम ने मूसा को ग़लत ठहराया और मूसा ने आदम को ग़लत ठहराया। और इस जुमले को रसूलअल्लाह ने तीन बार दोहराया। **(सही अल-बुख़ारी, वोल्यूम. जील्द 8, बुक 77, नम्बर 611)**

यह हदीस हज़रत अबू हुरैरा और हज़रत हुज़ैफ़ा के हवाले से बताई गई है, कि रसूलअल्लाह ने ऐसा फ़रमाया है: अल्लाह जो मुतबर्रिक और सरफ़राज़ है, आदमज़ात को इकट्ठा करेगा। और जो मोमिन होंगे वो वहीं पर खड़े रहेंगे जब तक कि जन्नत उनके पास नहीं लाई जाएगी। फिर वह हज़रत आदम से जाकर कहेंगे: ऐ हमारे बाबा आदम हमारे लिए जन्नत के दरवाज़े खोल दीजिए। तब आप जवाब देंगे। **जिस बात ने तुम्हें जन्नत से बेदख़ल किया था, वो था तुम्हारे बाबा आदम का गुनाह**। तो अब मैं ऐसा करने के लायक़ नहीं हूँ। **(सही मुस्लिम, किताब 001,** नंम्बर **0380)**

यह हदीस इस बात से सहमत है कि हज़रत आदम ने अपने गुनाह के बदले अपनी तमाम औलाद को जन्नत से महरूम करवा दिया था।

यह रिवायत आगे चलकर पैदा होनेवाली औरतों पर खुदा की लानत पड़ने का सबब बीबी हव्वा को बताती है।

अबू हुरैरा के हवाले से रसूलअल्लाह ने फ़रमाया "अगर बनी इस्राईल ख़ता ना करते, तो गोश्त कभी नहीं सड़ता, **और अगर हव्वा ख़ता ना करती, तो कोई भी औरत अपने शौहर के साथ बेवफ़ाई न करती।" (सही अल-बुख़ारी शरीफ़, वॉल्यूम 4, बुक 55, नम्बर 611)**

हम्माम बिन मुनाब्बिब यूँ फ़रमाते हैं: यह उन में से कुछ ऐसी हदीसे हैं जिन्हें हम रसूलअल्लाह से सुन चुके हैं, और उन में से एक जो रसूलअल्लाह ने हमें सुनाई वह यह है: अगर बनी इस्राईल ख़ता ना करते, तो खाना कभी बासी नहीं होता, और न खाने की चीजे कभी सड़तीं, **और अगर हव्वा ख़ता ना करतीं, तब कोई बीवी अपने शौहर को दग़ा न देती। (सही मुस्लिम शरीफ़, किताब 008, नम्बर 3472)**

एक और तफ़सीरकार जनाब अल-तबारी ऐसी कहानी बयान करते हैं, जो आदम और हव्वा के जन्नत से निकाले जाने के बारे में है। यूनुस इब्ने वहाब इब्ने ज़ैद के हवाले से (खुदा का कलाम, "उसने सरगोशी की" - ॲन्ड ही विसपर्ड' से यह है)

शैतान ने आकर हव्वा से उस शजर (पेड़) के बारे में सरगोशी की, और आप को उस पेड़ के क़रीब ले जाने में कामयाब रहा। और उसने आदम को उस पेड़ की तरफ़ राग़िब किया और यह सिलसिला उसने बनाए रखा। एक वक़्त जब आदम ने हव्वा की सोहबत चाही और उसे आवाज़ दी, तब वह बोली: "नहीं! जब तक तुम पेड़ के पास नहीं जाते।" जब वह वहाँ गए, तब हव्वा ने फिर से कहा: "नहीं, जब तक तुम इस पेड़ का फ़ल नहीं खा लेते।" आगे सिलसिला यूँ रहा, दोनों ने उसका फ़ल खाया, और उनके जिस्म के पोशीदा आज़ा उन्हें साफ़-साफ़ नज़र आने लगे। आगे यह होता है कि आदम जन्नत में यहाँ वहाँ छुपने लगे। तब उनके रब्ब ने उन्हें आवाज़ दी: "आदम क्या तू मुझसे छिपता फिर रहा है?" आदम ने जवाब दिया: "नहीं मेरे रब्ब, मगर तेरे आगे आते हुए मुझे शर्म आती है ।" जब अल्लाह ने दर्याफ़्त किया कि इस परेशानी का सबब तो बता, उन्होने जवाब दिया: वह हव्वा है मेरे मौला। **इस पर अल्लाह ने फ़रमाया: अब मुझ पर यह वाज़े हो गया है कि मैं महीने में एक बार हव्वा का ख़ून बहाऊँ,** और मैं उसे कम अक़्ल बना दूँ, हालाकि शुरू में मैने उसे अक़लमंद (**हलीमाह**) बनाकर पैदा किया था, और अब से बच्चा पेट में होते वक़्त और उसे पैदा करते वक़्त उसे मैं दर्द दूगाँ और मुश्किलात पैदा करूँगा। **इब्ने ज़ैद के हवाले से बताया जाता है: अगर हव्वा को इस दर्द से न गुज़रना पड़ता, तब तो दुनिया भर की औरतों को महावारी न होती, और वो सारी की सारी अकलमंद होतीं, और अपना हमल और ज़च्चगी का दौर आराम से गुज़ारती।**

[द हिस्ट्री ऑफ अल-तबारी: जेन्रल इन्ट्रोडक्शन अैंड फ्रॉम द क्रियेशन टू द फ्लड, ट्रान्सलेटिड बाये फ्रान्ज़ रोज़न्थान (स्टेट युनिवर्सिटी ऑफ न्यू योर्क प्रेस, अलेबनी 1989) वॉल्यूम 1, pp 280-281]

कुरआन शरीफ़ और हदीसों के इन हवालों से एक बात साफ़ हो जाती है कि हज़रत आदम के गुनाह की सज़ा तमाम आदम ज़ात को मिली है।

स) इन्सान अपनी कोशिशों से पाकबाज़ नहीं बन सकता है, और नेक आमाल किसी को जन्नत में नहीं ले जाएगें।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ وَمَن يَتَّبِعْ خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاء وَالْمُنكَرِ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَا مِنكُم مِّنْ أَحَدٍ أَبَدًا وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَن يَشَاء وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

ऐ ईमान वालो, तुम शैतान के क़दमों पर न चलो। और जो शख़्स शैतान के क़दमों पर चलेगा तो वह उसे बेहयाई और बदी ही का काम करने को कहेगा। और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो ***तुम में से कोई शख़्स पाक न हो सकता। (सूरह नूर 24: 21*** *मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

अगर मुसलमानों का यह कहना है कि आदमी पाक और बेगुनाह पैदा होता है' तो फिर किसी को पाक बनने के लिए खुदा के फ़ज़ल की ज़रूरत क्यों पड़ती है? क्या ऐसा नहीं है कि वह पैदाईश के वक़्त से ही वह पाक है? अगर मुसलमान भाई जवाब देते हैं कि इन्सान खुदा की नाफ़रमानी करके

नापाक या गुनेहगार साबित होता है, तब तो उन से यह सवाल करना लाज़मी हो जाता है: आदमी की फ़ितरत में वह कौन सी चीज़ है जो उसे बदी के रास्ते पर चलाती है, जिसकी वजह से उसको अल्लाह की तरफ़ से दोबारा पाकबाज़ बनाया जाता है।

हदीस का फ़रमान। जो बताती है:

अबू हुरैरा ने फ़रमाया है: मैने रसूलअल्लाह को ऐसा फ़रमाते सुना है: **"किसी भी शख़्स के नेक आमाल उसे जन्नत में नहीं ले जाएँगे (यानी आप नेकियों के बल पर जन्नत में मुक़ाम हासिल नहीं कर सकते)**, तब उन्होंने (रसूलअल्लाह के सहाबियों ने) पूछा,"क्या आप भी नहीं ऐ रसूलअल्लाह?" आपने फ़रमाया 'मैं भी नहीं जब तक **अल्लाह तआला का फ़ज़ल और रहमत मुझ पर ना होगें।" (सही अल-बुखारी, वोल्यूम- 7, बुक- 70, नम्बर- 577)**

हज़रत आईशा के हवाले से रसूलअल्लाह ने फ़रमाया है, "सही ढ़ंग से, इमानदारी से और मुनासिब तौर से नेकियाँ करो, और यह ख़ुशी का पैग़ाम कुबूल करो, **क्योंकि किसी की भी नेकियाँ उसे जन्नत में दाख़िल नहीं करेंगी"** जब लोगों ने आप से पूछा, "ऐ रसूलअल्लाह, क्या आप तक को नहीं? " **तब आप ने जवाब दिया, "मुझ तक को नहीं, जब तक कि अल्लाह मुझे बख़्श न दे और मुझ पर अपना रहम व करम ना फ़रमा दे" (सही अल-बुख़ारी, वोल्यूम- 8, बुक- 76, नम्बर- 474)**

कुरआन शरीफ़, हदीस और बाइबल मुक़द्दस एक ही राय रखते हैं कि इन्सान ने विरासत में गुनाह करने की फ़ितरत हज़रत आदम की तरफ़ से पाई है और अपने आमाल के तहत गुनाहगार है, इसीलिए हम ख़ुदा के इन्साफ़ से नहीं बच सकते। इनके इलावा वो सारी आयतें बताती हैं कि आदमी ख़ुद को किसी भी तरह से पाकबाज़ नहीं बना सकता है, और ना तो अपनी नेकियों से पाकबाज़ बन सकता है।

तो इन हालात में, हमारे पास उम्मीद का एक ही रास्ता बचता है और वह ये कि ख़ुदा अपनी तरफ़ से हमारे लिए कोई ऐसा रास्ता तैयार करे। क्योंकि हम तो लाचार बंदे हैं, और तब तो ख़ुदा को हमें अपने गुनाहों की सज़ा से निजात दिलाने का कोई ज़रिया बनाना चाहिए। कोई भी इन्सान किसी दूसरे गुनेहगार इन्सान को बचा नहीं सकता क्योंकि वह बज़ाते ख़ुद एक गुनेहगार है।

तो इसी सबब से ख़ुदा पाक ने हज़रत ईसा मसीह को दुनिया में भेजा था, जिनकी पैदाईश एक कुँवारी से हुई, और आप इस ज़मीन पर तशरीफ़ लाए।आप में किसी इन्सान का ख़ून नहीं था, बल्कि आप पाकबाज़ और पाकीज़ा तौर से पैदा हुए ताकि आप अपने ऊपर सारे आलम का गुनाह ले लें और हमें रोज़े क़यामत, ख़ुदा की सज़ा से बख़्शवाएँ।

कई मुसलमान भाइयों का मानना है कि सारे नबी पाकबाज़ और बेऐब थे।मगर यह ख़्याल दुरूस्त नहीं है।तो लीजिये आगे हम ने एक फ़ेरिस्त

पेश की है कुछ ख़ास नबियों की जिन से गुनाह सरज़द हुए थे, और यह हवाला कुरआन शरीफ़ से मिला है।

हज़रत आदम और हव्वा (**सूरह 2: 36, 7: 22-23**)
हज़रत नूह (**सूरह 11: 45-47**)
हज़रत इब्राहिम (**सूरह 26: 82**)
हज़रत मूसा (**सूरह 28: 15-26**)
हज़रत दाऊद (**सूरह 38: 24-25**)
हज़रत सुलैमान (**सूरह 38: 34**)
हज़रत ज़कर्या (**सूरह 3: 40-41**)
हज़रत यूनुस (**सूरह 37: 142, 21: 87**)
हज़रत मुहम्मद (**सूरह 4: 102-107, 9: 43, 40: 55, 48: 1-2, 80: 1-10**)

कुरआन शरीफ़ फ़रमाता है जब खुदा पाक ने इबलीस को सज़ा सुनाई और उसे क़यामत तक की मोहलत दे दी, ताकि उस दिन तक वो आदम की तमाम औलाद को गुमराह कर के गुनाहों के रास्ते पर भटका सके।

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ

कहने लगा जब मुझको मोहल्लत मिल गई तो मुझको भी तेरी इज़्ज़त की क़सम कि मैं उन सबको गुमराह करूंगा। ***(सूरह सॉद 38: 82*** *मौलाना अशरफ़ अली थानवी)*

कुरआन शरीफ़ आगे यह दावा करता है कि बीबी मरियम की वालिदा ने अल्लाह से दुआ की कि वह आप की बेटी और नवासे को इबलीस से बचाए रखे।

إِذْ قَالَتِ امْرَأَةُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي إِنَّكَ أَنتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ
فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنثَى وَاللّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالأُنثَى وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وِإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

''जब कि इमरान की बीवी ने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर्दिगार मैंने मन्नत मानी है आपके लिए इस बच्चे की जो मेरे पेट में है,कि वह आज़ाद रखा जाएगा, सो आप मुझसे क़बूल कर लीजिए, बेशक आप खूब सुनने वाले ,खूब जानने वाले हैं।फिर जब लड़की को जन्म दिया कहने लगीं कि ऐ मेरे परवर्दिगार मैंने तो वह हमल ''यानी गर्भ'' लड़की जन्मी, हालाकि ख़ुदा तआला ज़्यादा जानते हैं उसको जो उन्होने जन्मी,और वह लड़का इस लड़की के बराबर नहीं और मैंने इस लड़की का नाम मरियम रखा, और मैं इसको और इसकी औलाद को आपकी पनाह में देती हूँ शैतान मर्दूद से।'' ***(सूरह आलि इमरान 3: 35-36*** *मौलाना अशरफ़ अली थानवी)*

हदीस में यह बताया जाता है कि जितने भी इन्सान इस सरज़मीन पर पैदा हुए हैं, उन सब में **हज़रत ईसा और उनकी वालिदा बीबी मरियम** ही वो दो ऐसी शख़्सियतें हैं जिनको शैतान छू नहीं पाया।

सईद बिन अल-मूसैयब बयान करते हैं: अबू हुरैरा फ़रमाते हैं, *''मैनें रसूलअल्लाह को ऐसा कहते हुए सुना है , ऐसा कोई भी बनी आदम में पैदा नहीं हुआ जिसे इबलीस ने न छुआ होगा। शैतान के छूने की वजह से पैदा हुआ बच्चा ज़ोर ज़ोर से रोता है,* ***बस बीबी मरयम और आप के बेटे को छोड़कर*** *।'' उस के बाद अबू हुरैरा ने यह आयत पढ़ी।* ***(सूरह 3: 36)***

[सही अल बुख़ारी' वोल्यूम 4, बुक 55, नम्बर 641, और वोल्यूम 4, बुक 54, नम्बर 506]

हज़रत ईसा मसीह और बीबी मरियम ही वो दो शख़्सियतें हैं जिन्हें ना तो इबलीस छू पाया ना आप दोनों के आस पास भटक पाया।

पूरे कुरआन शरीफ़ और सारी हदीसों में, हज़रत ईसा मसीह को पाकबाज़ और बेऐब बाताया गया है!

قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكِ غُلَامًا زَكِيًّا

उसने कहा, मैं तुम्हारे रब का भेजा हुआ हूं ताकि तुम्हें एक ***पाकीज़ा लड़का*** *दूं।* ***(सूरह मरयम 19: 19*** *मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ)*

और बाइबल मुक़द्दस भी ऐसा ही फ़रमाती है।

''मरियम ने फ़रिश्ते से कहा यह कैसे होगा जब कि मैं कोई मर्द को नहीं जानती। फ़रिश्ते ने उसे जवाब दिया कि 'रूहुलकुदुस तुझ पर नाज़िल होगा

और ख़ुदा तआला की क़ुदरत तुझ पर साया डालेगी इसलिये वह **मौलूद ए मुक़द्दस ख़ुदा का बेटा कहलाएगा।" (लूक़ा 1: 34-35)**

जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, हज़रत ईसा मसीह आलम भर के गुनेहगारों की ख़ातिर वह आख़री कफ़्फ़ारा बनकर तशरीफ़ लाए थे। ताकि आप गुनाहों का फ़िदिया पूरी तौर से उतारकर ख़ुदा की उस अबदी पाक ज़ात को मुतमईन कर सकें, मगर ऐसा करने से पहले आप को इन्सानी फ़ितरत इख़्तियार करनी पड़ी थी। लेकिन साथ ही साथ इस फ़ितरत को उस पहले गुनाह की फ़ितरत से बिल्कुल आज़ाद रखना ज़रूरी था। क्योंकि हर एक आदमी जो उस पहले आदम की नस्ल से आता है, वह अपनी विरासत में गुनाह करने की फ़ितरत लेकर पैदा होता है। **(बाईबल मुक़द्दस -रोमियों 5: 12-14, पैदाईश 8: 21, ज़बूर 51: 5, 58: 3)**

इसीलिए तो इस निजात दहिंदे को एक कुँवारी से पैदा होना पड़ा ताकि उस में गुनाह न हो। अगर हज़रत ईसा मसीह ख़ुदा पाक के रूहुल क़ुदुस से फ़ौक़ी तौर पर पैदा न होते, तब तो आप को भी एक निजात दहिंदे की ज़रूरत पड़ती गुनाहों से आज़ाद होने के लिए।

ग़ौर करने की बात ये है अगर दो लोग एक गहरे गड़हे में फंस जाते हैं, तब उन्हें किसी तीसरे की बाहर से मदद चाहिए होती है ताकि उन्हें बाहर निकाला जा सके। उसी तरह से, हम सभी को किसी ऐसे शख़्स की ज़रूरत है जो पाक और बेऐब हो और आदम की गुनाहआलूद फ़ितरत का

हिस्सेदार न हो, ताकि वो हमें हमारे गुनाहों की दलदल से बाहर निकाल सके।

ड) क्या कोई शख़्स किसी दूसरे के बदले मर सकता है, या कुरबानी का फ़िदिया कुबूल किया जाता है?

पहले हम इस बात को इस्लामी नज़रिये से देखेंगे और बाद में हम बाईबल मुक़द्दस का नज़रिया पेश करेंगे।

तो शुरू करते हैं कुरआन शरीफ़ की इन आयतों से

"तो हमने उसे खुश खबरी सुनाई एक अक्लमंद लड़के की फिर जब वह उसके साथ काम के क़ाबिल हो गया कहा ऐ मेरे बेटे मैंने ख़्वाब देखा मैं तुझको ज़िबाह करता हूँ अब तू देख तेरी क्या राय है कहा ऐ मेरे बाप कीजिए जिस बात का आपको हुक्म होता है खुदा ने चाहा तो क़रीब है आप मुझे साबिर पाएंगे। तो जब उन दोनो ने हमारे हुक्म पर गर्दन रखी। और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटाया उस वक़्त हाल ना पूछा और हमने उसे निदा फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम बेशक तूने ख़्वाब सच कर दिखाया हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को। बेशक ये रौशन जाँच थी। **और हमने एक बड़ा ज़बीहा उसके फिदिया में दे कर बचा लिया।** और हमने पिछलों में उसकी तारीफ़ बाक़ी रखी। सलाम हो इब्राहीम पर। **(सूरह साफ़्फ़ात 37: 101-109** कंजुल ईमान)

इन आयतों में बताया गया है कि अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम के बेटे की कुरबानी के बदले एक बहुत ही शानदार कुरबानी अदा की। यहाँ बस एक ही मसला खड़ा होता है कि कुरआन शरीफ़ यह नहीं फ़रमाता कि आख़िर यह शानदार कुरबानी क्या थी। क्या यह किसी जानवर की थी? या फिर यह वही मेंढ़ा था जिसका ज़िकर बाइबल मुक़द्दस की पहली किताब **पैदाईश 22: 13** में आता है? बाइबल मुक़द्दस की जानिब मरूब होने से यह मसला खड़ा होता है कि पैदाईश की किताब दरअसल गुनेहगारों के बदले हज़रत ईसा मसीह की होनेवाली मौत के पेशतर का ज़िकर करती है। और ख़ुदा का वह मेमना जिसे हज़रत इब्राहिम ने पेशतर ही देखा था, वह ख़ुद हज़रत ईसा मसीह थे।

अब हम ज़रा हदीसों में कुछ सुबूत देखेंगे:

अबू मूसा के हवाले से ये ख़बर है कि रसूलअल्लाह फ़रमाते हैं: जब रोज़े क़यामत होगा तब अल्लाह हर एक मुसलमान के हवाले एक <u>यहूदी या एक ईसाई को करके, यह कहेगा</u>: जहन्नुम की आग से बचने का यही तुम्हारा बदला है। **[सही मुस्लिम, बुक 037 नम्बर 6665]**

अबू बुर्दा ने यह ख़बर अपने वालिद के हवाले से दी है जो रसूलअल्लाह फ़रमा चुके हैं: "कोई भी मुसलमान जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा क्योंकि उसके बदले में अल्लाह ताआला एक यहूदी या एक ईसाई को दोज़ख़ में डाल देगा।"उमर बिन अब्द अल-अज़ीज़ ने क़सम खाई उस एक अल्लाह की जिसके इलावा कोई दूसरा खुदा नहीं है, कि तीन बार आप के वालिद

ने इसी बात को रसूलअल्लाह को कहते सुना है।
[सही मुस्लिम, बुक **037** नम्बर **6666**]

अबू बुर्दा ने यह ख़बर दी है कि रसूलअल्लाह ने फ़रमाया है, ''क़यामत के रोज़, अपने सिरों पर पहाड़ जैसा गुनाहों का बोझ लेकर कुछ लोग मुसलमानों मे से अल्लाह की हुज़ूरी में पेश होंगे, तब अल्लाह उनको बख़्श देगा और उनके बदले यहूदियों और ईसाईयों को खड़ा करेगा (जहाँ तक मैं समझता हूँ)। इस पर रैब ने जवाब दिया: मुझे नहीं पता कि इस बात पर किसी को शक होगा। अबू बुर्दा ने आगे फ़रमाया: मैने यह बात उमर बिन अब्द अल अज़ीज़ को बताई थी जिसपर उनका जवाब था: क्या वह शक़्स तुम्हारे वालिद थे जिन्होंने रसूलअल्लाह को ऐसा कहते सुना था?'' तौ मैने जवाब दिया: जी! **[सही मुस्लिम, बुक 07, नम्बर 6668]**

बराहे मेहेरबानी आप इस पर ग़ौर फ़रमाइये कि यह तमाम हदीसें साफ़ तौर से बताती हैं कि अल्लाह सारे मुसलमानों को दोज़ख़ की आग से बचाकर उनके बदले यहूदियों और ईसाईयों को डालेगा।

इसे कफ़्फ़ारा ए-बदल कहते हैं (किसी के बदले किसी दूसरे को कुरबान करना), जिस में हम यही फ़र्क़ देखते हैं कि किसी एक को सज़ा देने के बजाए, अल्लाह बेशुमार यहूदियों और ईसाईयों को मुसलमानों के बदले दोज़ख़ की आग में डालने वाला है।

अब हम ज़रा बाइबल मुक़द्दस की तरफ़ अपना रूख़ करके यह देखेंगे कि खून की कुर्बानी देना क्यों मानिख़ेज़ है।

क्योंकि जिस्म कि जान उसके खून में होती है और उसको मैने तुम्हें इसलिये दिया है के वह मज़बेह पर तुम्हारे लिए कफ़्फ़ारा हो। ये खून ही है जो किसी जान के लिए कफ़्फ़ारा देता है। (**एहबार 17: 11**)

और तक़रीबन सब चिज़ें शरीअत के मुताबिक़ खून से पाक कि जाती हैं अैर बग़ैर खून बहाए माफ़ी नही होती। (**इब्रानियों 9: 22**)

खुदा ने हज़रत ईसा को मुक़र्रर किया कि आप अपना खून बहाऐं और इन्सान के गुनाह का कफ़्फ़ारा बन जाए। और उस पर ईमान लाने वाले फ़ायदा उठाएँ। **ये कफ़्फ़ारा खुदा के इन्साफ़ को ज़ाहिर करता है** इसलिए के उसने बड़े सबर और तहम्मुल के साथ उन गुनाहों को जो पेशतर हो चुके थे बरदाश्त किया। (**रोमियो 3: 25**)

इन हवालों के ज़रिए हम ने देखा कि जिस्म में जान उसमें दौड़ते हुए खून से पैदा होती है, और खुदा ने इसे हमारी रूहों के कफ़्फ़ारे के बदले कुरबानगाह पर चढ़ाया है। बस एक खून ही है जो हमारी रूहों का कफ़्फ़ारा अदा कर सकता है, क्यों कि जिस्म की जान खून में पाई जाती है। हर एक चीज़ खून के ज़रिए पाक की जाती है, और बिना खून बहाए, गुनाहों की माफ़ी नहीं है। इसीलिए तो खुदा पाक ने हज़रत ईसा मसीह को कफ़्फ़ारा मुक़र्रर करके भेजा था। आप पर ईमान ले आने से, और आप ने

जो हमारी ख़ातिर सलीब पर कुर्बानी दी है उसे कुबूल कर लेने से, हमें अपने गुनाहों की माफ़ी मिलेगी। इसके इलावा हम जन्नत की उस अबदी ज़िन्दगी के वारिस बन सकते हैं।

रोमियों **3: 25** बताता है "**ये कफ़्फ़ारा ख़ुदा के इन्साफ़ को ज़ाहिर करता है**" इसके माने क्या हुए? जब हम ख़ुदा के किरदार और उसकी फ़ितरत की तरफ़ अपना रूझान करते हैं, तो पाते हैं वह अपनी तमाम सिफ़तों को तवाज़्ज़ुन से दिखाता है।

वह एक रहम दिल ख़ुदा है, वह मेहरबान और मुहब्बत करने वाला है, अपने बंदो पर तरस खाता है और एक इन्साफ़ पसंद ख़ुदा है। अगर हम उसकी तमाम सिफ़्तों को तौल पाए, तो उन सभी को हम बराबरी का ही पाएँगे।

हालाकि ख़ुदा हम से बेहद मुहब्बत रखता है, मगर वह अपने बंदे की ख़ताओं और गुनाहों को यूँ ही नज़र अंदाज़ नहीं कर सकता। क्योंकि वो एक निहायती इन्साफ़ पंसद माबूद है।

इसीलिए तो हज़रत ईसा मसीह को जमीन पर भेजकर, ख़ुदा ने जो सजाऐं, जो लानतें हमारे और आप के वास्ते मुक़र्रर की थीं, उन सभी को हज़रत ई सा मसीह पर डाल दिया है। और हज़रत ईसा मसीह ने वो सारी सज़ाएँ अपने पर ले लीं, ताकि हम ख़ुदा पाक का रहम व करम, शफ़क़त व मुहब्बत हासिल कर सकें। हमारे गुनाहों का पहाड़ जैसा बोझ हज़रत ईसा

मसीह ने सलीब पर उठा लिया है, ताकि हम खुदा की कुर्बत में रहकर उस अबदी ज़िन्दगी का लुत्फ़ उठाएँ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ وَمَن يَتَّبِعْ خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاء وَالْمُنكَرِ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَا مِنكُم مِّنْ أَحَدٍ أَبَدًا وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَن يَشَاء وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

*ऐ ईमान वालो शैतान के क़दमो पर ना चलो और जो शैतान के क़दमो पर चले तो वो तो बेहयाई और बुरी ही बात बताएगा और अगर अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी रहमत तुम पर न होती तो तुम मे कोई भी कभी सुथरा न हो सकता। **(सूरह नूर 24: 21** कंज़ुल ईमान)*

तो यही वह वजह थी कि हज़रत इब्राहिम के बेटे के बदले खुदा ने अपनी तरफ़ से एक कुर्बानी का इन्तिज़ाम किया।

*और हम ने एक बड़ा ज़बीहा उसके फ़िदिया में देकर उसे बचा लिया और हमने पिछलों में उसकी तारीफ़ बाकीं रखी। सलाम हो इब्राहीम पर। **(सूरह साफ़्फ़ात 37: 101-109** कंज़ुल ईमान)*

गुनाहों का तक़ाज़ा है सज़ा। गुनाह को मिटाना, ख़त्म कर देना और दूर कर देना लाज़मी है, क्योंकि गुनाह का मतलब है खुदा पाक की ज़ात से बग़ावत करना। इसकी क़ीमत अदा करने का मक़सद होता है कि गुनाह के ख़िलाफ़ दिए गए खुदा के फैसले को अनजाम देना। तौभी सिर्फ़ तौबा कर लेने से ही खुदा का गुस्सा ठंडा नहीं होता- गुनाहों का कफ़्फ़ारा तो अदा करना लाज़मी होता है।

अज़ीज़ क़ारयीन, हम आप से एक सवाल पूछना चाहेंगे: "क्या आप की वफ़ात के बाद आप को यक़ीन है कि आप जन्नत में दाख़िल कर लिए जाएँगे?" चाहे हम कितनी ही नेकियाँ क्यों न कर लें, मगर सच तो यह है कि हमारी बदियाँ, हमारी नेकियों से कहीं ज्यादा हैं। हम ने बाईबल मुक़द्दस और कुरआन शरीफ़ में देखा है कि हम बन्दो की नेकियाँ हमें ख़ुदा के आज़ाब से क़तई नहीं बचा सकतीं। हमें ज़रूरत है एक निजात दिहन्दे की, और वह निजात दिहन्दे खुद सैय्यदना हज़रत ईसा अल मसीह हैं, जो हमारी सरज़मीन पर तशरीफ़ लाए, गुनाहों से हमें बचा लेने की ख़ातिर।

"क्योंकि ख़ुदा ने दुनिया से ऐसी मोहब्बत की कि उसने अपना इकलौता बेटा बख़्श दिया ताकि जो कोई उस पर ईमान लाए हलाक ना हो बल्कि हमेशा की ज़िन्दगी पाए। क्योंकि ख़ुदा ने बेटे को दुनिया में इसलिए नहीं भेजा कि दुनिया पर सज़ा का हुक्म करे बल्कि इसलिए के दुनिया उसके वसीले से निजात पाए।" **(यूहन्ना की इन्जील 3: 16,17)**

हज-ए-बदल

हज़रत मोहम्मद के ज़माने से हज-ए-बदल का रिवाज चलता चला आया है जिसकी इजाज़त आपने दी थीं इसकी दलीलें यूँ हैं:

1) अपनी मरी हुई माँ के बदले एक बेटा हज-ए-बदल अदा कर सकता है। **(सही अल-बुख़ारी, वोल्यूम- 3, बुक- 29, नम्बर- 77)**

2) अपने ज़ईफ़ और बीमार बाप के बदले एक बेटा हज-ए-बदल अदा कर सकता है। **(सही अल-बुख़ारी, वोल्यूम- 2, बुक- 26, नम्बर- 589 और वोल्यूम- 8, बुक- 74, नम्बर- 247)**

3) अपनी मरी हुई बहन के बदले एक भाई हज-ए-बदल अदा कर सकता है। **(सही अल-बुखारी, वोल्यूम- 8, बुक- 78, नम्बर- 690)**

4) अपने ज़ईफ़ बाप के बदले एक बेटा हज-ए-बदल अदा कर सकता है। **(सुन्ना अबु दाऊद, बुक- 10, नम्बर- 1806)**

ज़रा ग़ौर फ़रमाईये, हज्ज जैसा ज़रूरी एहकाम एक के बदले कोई दूसरा अदा कर सकता है। यानि आप किसी दूसरे के लिए नेकी कमा सकते हैं, जिससे उसकी बख़्शिश हो सकती है।अब इससे कोई ग़रज़ नहीं कि हज्ज-ए-बदल करनेवाला कैसा भी इन्सान क्यों न हो, तब तो पाकबाज़ हज़रत ईसा मसीह कि कुरबानी कितनी अहम नाक है।कुरान शरीफ़ फ़रमाता है कि सोने चांदी से छुड़ाया नहीं जा सकता लेकिन कुरबानी देकर ऐसा किया जा सकता है।

ऐ अजिज दोसतो याद करे जब किसि मुसलमान के घर में औलाद पैदा होता है तो उसका अकिका करवाना लाजिम हो जाता है।कया आप इस दुआ से वाकिफ है जो अकिक़ा करते वक्त अदा की जाती है।

दुआ-ए- अकिक़ा

''ऐ मेरे अल्लाह'' ये अकिक़ा मेरे बच्चे ----- के लिये।

ये खुन इस बच्चे के खुन के बदले

ये बदन इस बच्चे के बदन के बदले

ये हड्डी इस बच्चे के हड्डी के बदले

ये जिलद इस बच्चे के जिलद के बदले

''ऐ मेरे अल्लाह'' मेरे बच्चे को जहन्नुम कि आग से बचा" अल्लाह के नाम'

अल्ला - ह ु- अकबर"

जरा इस बात पर गौर से मुताल्ला करे।

अगर एक बच्चा एक जानवर के खुन से जहन्नुम कि आग से बचाया जा सकता है तो फिर सारे आलम के लोगो का गुनाह हजरत ईसा मसिह कि पाक कुरबानी के वसिले से कयो नहि बचाया जा सकता ?

अगर आज आप भी अपने गुनाहों के बोझ से हलके होकर खुदा से अपने गुनाह बख़्शवाकर जन्नत में वह अबदी ज़िन्दगी गुज़ारने के ख्वाहिशमन्द हों, तब तो मैं आप से गुज़ारिश करता हूँ कि आप अपने दिल में हज़रत

ईसा मसीह को तशरिफ़ लाने कि दावत दें और उस फ़ज़ल को कुबूल फरमाएँ जो ईसा मसीह के मसलूब होने पर आपके लिए बतौर एक तोहफ़ा दस्तियाब है।

इसके लिए आप यह एक आसान सी **दुआ** कर सकते हैं: ''ऐ ख़ुदा पाक, मैं कुबूल करता हूँ कि मैं तेरा गुनाहगार बंदा हूँ। और मैने अब तक तेरे बरख़िलाफ़ बेशुमार गुनाह किए हैं। आज मैंने जाना है कि मैं अपनी नेकियों के बल पर दोज़ख़ की आग से बच नहीं सकता हूँ। मैं तेरा शुक्रगुज़ार हूँ कि तू ने मुझ नाचीज़ के बदले हज़रत ईसा मसीह को मसलूब किया, जिस सज़ा का मुख़्तार मैं था। ऐ मेरे रब मै तेरी तरफ़ से दी गई मुआफ़ी और उस अबदी ज़िन्दगी का ये बेशक़ीमत नज़राना जो हज़रत ईसा मसीह के वसीले से मुझे मिल रहा है, उसे मैं शुक्र के साथ कुबूल करता हूँ। ऐ मसीह आज मैं अपना भरोसा अपने ऊपर से और उन चीज़ों पर से हटाता हूँ जिन पर मैं आज तक भरोसा करता आया था, और अब से मैं अपना भरोसा पूरी तौर से आप पर रखूगाँ।

बराऐ करम मेरे तमाम गुनाहों को बख़्श दीजिये। मैं अपने बुरे आमाल से फिरकर अब आप की राह पर आप के पीछे हो लूँगा। आमीन!

हम बड़ी इन्किसारी के साथ आप से इलतिजा करेगें कि आप बग़ैर तास्सुब के बाइबल मुक़द्दस को पढ़िये और खुद ही तय कीजिये कि हक़ीक़त क्या है।

ईसा मसीह ने फ़रमाया, "और तुम **सच्चाई से वाकिफ** होगे। और सच्चाई तुमको आज़ाद करेगी"। **(यूहन्ना कि इन्जील 8: 32)**

अज़ीज़ क़ारयीन उम्मीद है कि आप ने इस किताब के ज़रिए एक वसीह मालूमात हासिल की है। इससे मुताल्लिक़ अगर आप कोई सवाल पूछना चाहते हैं तो हमारे दिए गए E-mail पर राबता क़ायम करें। शुक्रिया खुदा आपको हिदायत फ़रमाये। आमीन

info@truthrevealed.info

Some helpful websites:

http://www.answering-islam.org /

http://www.answeringmuslims.com /

http://www.gotquestions.org /

Online Bible: http://www.biblegateway.com/

To download the book in other languages, audio mp3 of Izhaar-e-haqq (Urdu) and to know other products visit.

http://www.truthrevealed.info/

Urdu-Hindi Dictionary

उर्दू शब्द	हिन्दी शब्द
मौज़ू	विषय
तसदीक़	पुष्टि करना
मोअतबर	विश्वासयोग्य
मर्ज़	बीमारी
मुफ़ीद गिज़ा	पौष्टिक आहार
अक़ीदा	आस्था
ज़ेहेन	बुद्धि
तसव्वुर	कल्पना
विलादत	जन्म होना
मसलूब होना	क्रूस पर चढ़ना
नजात	उद्धार
मजमुआ	इकठ्ठा होना
मुख़्तलिफ़	विभिन्न
इबतिदा	आदि
इलहाम	प्रेरणा, प्रकाशन
मुहाफिज़	रक्षक
तवारीख़ी	ऐतिहासिक
वसूक़	निश्चित
तोहमत	दोष, इल्जाम
मुबाश्रत	संभोग, शारिरिक संबध
ख़ल्क़	सृष्टि